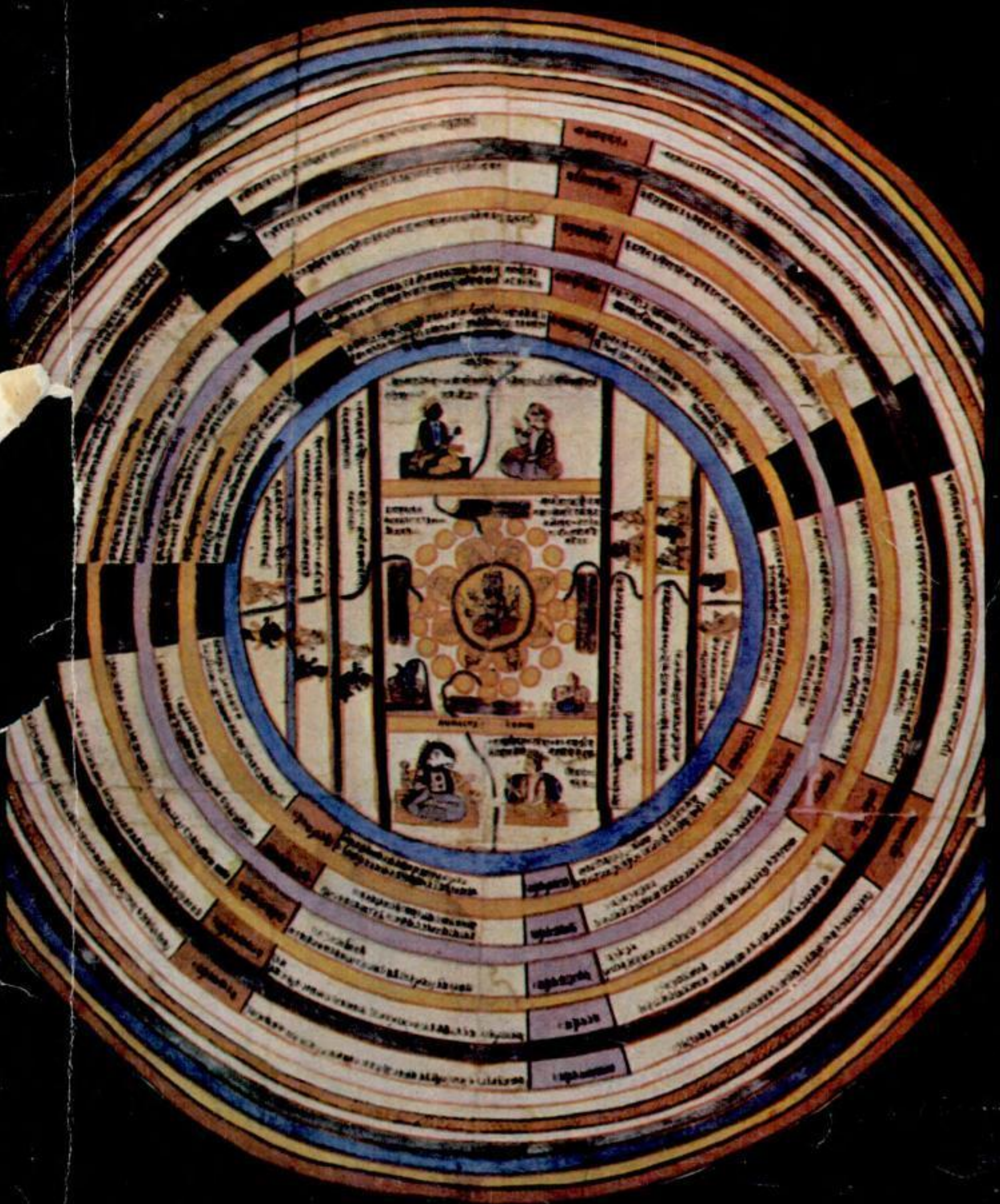


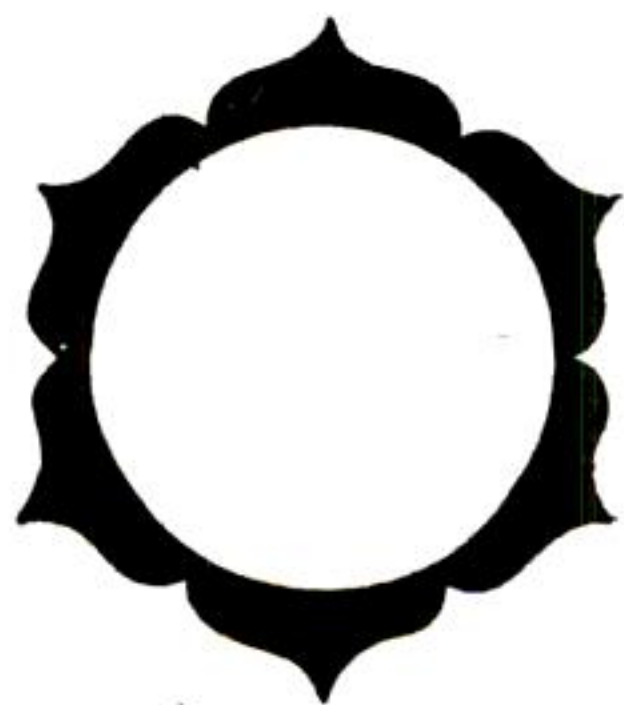
पं. के. ए. दुबे 'पद्मेश'

यन्त्र शक्ति



यन्त्र शक्ति

[लगभग १७५ चित्रों से सुसज्जित विभिन्न प्रकार के सरल तथा सुसाध्य यन्त्रों का पूर्ण परिचय कराने वाला अनूठा संग्रह]



प्रो० के० ए० दुबे 'पद्मेश'

[आर्यभट्ट, वराहमिहिर तथा अन्य अनेक उपाधियों से विभूषित एवं विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में भविष्य-कथन कर्ता]



सुबोध पब्लिकेशन्स

ISBN: 978-81-7078-038-0

Rs 100.00

© सुबोध

YANTRA SHAKTI

Prof. K. A. Dubey 'Padmesh'

प्रकाशक:

सुबोध पब्लिकेशन्स
२/३ बी, प्रंसारी रोड,
नयी दिल्ली-११०००२

संस्करण : २०१४ मुद्रक
शाहबरा-दिल्ली-११००३२

रवीन्द्रा ऑफसेट प्रेस

परमादरणीय मौसी
स्व० श्रीमती भगवानीदेवी मिश्र

जिनके

प्रोत्साहन, वात्सल्य प्रेम और आशीर्वाद
की छाया में बौद्धिक विकास हुआ,
उस महान् विभूति की
पुण्य स्मृति में सादर समर्पित ।

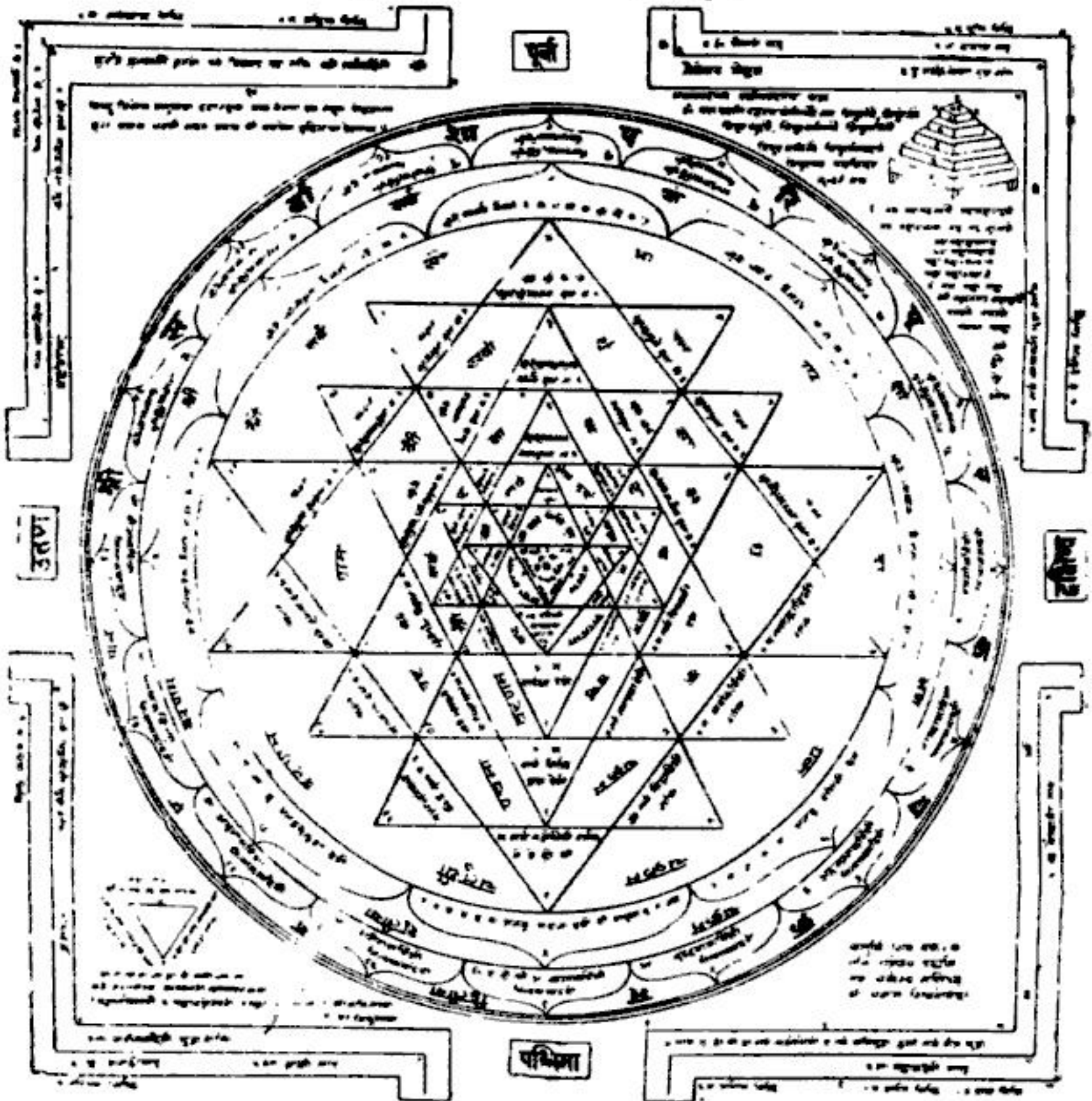
—क० ए० दुबे 'पद्मेश'

This One



45FX-G76-LJZF

॥श्री यन्त्रम्॥



भूमिका

तन्त्र की भाँति यन्त्र भी मन्त्र-विद्या का एक प्रयोगात्मक रूप है। और अनेक प्राचीन साधनाओं की भाँति यह भी आज लुप्तप्राय है। भौतिक यन्त्रों की बहुलता (मशीनों के आधिक्य) में व्यक्ति इन आध्यात्मिक यन्त्रों को भूल गया है। यहाँ तक कि अब इस यन्त्रों पर विश्वास करने वाले जन भी थोड़े ही रह गये हैं। आज तो जो कुछ भी सत्य और मान्य है, वह सब भौतिक है।

इधर कुछ वर्षों से जनरुचि ने अतीत की ओर अँगड़ाई लेकर देखा है, और प्राचीन सभ्यता-संस्कृति को समझने-परखने का प्रयास करने लगी है। फलतः, कई विषयों पर, जो लुप्तप्राय हो गये थे, साहित्य-सृजन होने लगा है। कई पुस्तकें ऐसी आयी हैं, जिनमें भारतीय अध्यात्म को नये सिरे से सरल भाषा में उजागर किया गया है।

यन्त्र-विद्या पर यद्यपि सैकड़ों ग्रन्थ उपलब्ध हैं, और विभिन्न प्रकाशनों से उनकी टीकायें भी (मूल सहित) प्रकाशित हुई हैं, तो भी वह साहित्य सर्वसुलभ और जनसामान्य के लिए बोधगम्य नहीं था। इधर, समय के अनुसार उस प्रकार के ग्रन्थों के पुनः सर्वथा नवीन और सहज-सुबोध प्रस्तुतीकरण न पाठकों को आकर्षित किया है। उनके आकर्षण से प्रेरित होकर तद्विषयक अनेक पुस्तकें लिखी और प्रकाशित की गयी हैं।

मेरी चार पुस्तकों के प्रकाशनोपरान्त अनेक मित्रों ने सुझाव दिया कि मैं यन्त्र विद्या पर भी एक पुस्तक लिखूँ। कुछ व्यस्ति और विसंगति के बावजूद, मित्रों की वह प्रेरणा और शुभकामना मेरे मस्तिष्क को उद्वेलित करती रहती थी। उसीका परिणाम है यह पुस्तक—यन्त्र शक्ति।

यन्त्र-साधना के सम्बन्ध में कई ग्रन्थ प्राप्त होते हैं। उनमें वर्णित विषय एक होने पर भी साधना-विधि में कहीं-कहीं अन्तर धीख पड़ता है। अनेक स्थलों पर वर्णित साधना-विधि इतनी जटिल और दुष्कर है कि पढ़कर साधक का उत्साह भंग हो जाता है। उसे निराशा घेर लेती है।

उन यन्त्रों की साधना हेतु वर्णित सामग्री, विधि-विधान, हवन-पूजन-आदि सभी विषय अत्यधिक जटिल हैं। पहली समस्या आती है वस्तु की शुद्धता की। फिर आज के युग में दीर्घकालीन साधना सामान्य व्यक्ति के लिए सम्भव नहीं दीखती। अतः इस पुस्तक में मैंने सरलतम प्रयोगों को उनकी सहज साधना-पद्धति के साथ प्रस्तुत किया है।

मेरा प्रमुख विषय ज्योतिष है। उसीके पूरक रूप में मैंने कुछ तन्त्र-यन्त्र का भी अध्ययन किया था। किन्तु व्यावहारिक जीवन में ज्योतिष ने इतना व्यस्त कर रखा है कि लेखन के लिए बहुत कम समय निकाल पाता हूँ। फिर भी अनेक स्वजनों और मित्रों की प्रेरणा से यन्त्र-मन्त्र पर थोड़ा-बहुत लिखने का प्रयास करता रहा हूँ। लक्ष्य है कि ऐसे आध्यात्मिक विषयों पर कुछ और भी लिखकर भारतीय संस्कृति के उपासकों को भेंट करूँ, फिर जैसी हरि इच्छा!

पुस्तक के लेखन में जिन सज्जनों से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में सहयोग मिला है मैं उनका हृदय से आभारी हूँ।

आशा है मेरी अन्य पुस्तकों के अनुरूप पाठकगण इसे भी उपयोगी पायेंगे।

के० ए० दुबे 'पद्मेश'

ज्योतिष योग पत्रिका

१८ पद्मेश लेन, रतनलाल नगर

कानपुर-२२

अनुक्रम

भूमिका		५
प्रथम रश्मि	यन्त्र-साधना : प्रारम्भिक परिचय	११
	यन्त्र क्या है ?, मन्त्र, तन्त्र, यन्त्र, अध्यात्म का महत्त्व ।	
द्वितीय रश्मि	यन्त्रों की रचना और रूपाकार	१८
	यन्त्र-रचना की पृष्ठभूमि, यन्त्र : जड़ और चेतन का योग, प्रतीक, विधान, यन्त्र और मूर्ति ।	
तृतीय रश्मि	यन्त्रों का वर्गीकरण	२२
	शान्तिकर्म, आकर्षणकर्म, वशीकरणकर्म, स्तम्भनकर्म, उच्चाटन-कर्म, मारणकर्म, यन्त्रों के प्रकार : भूपृष्ठ यन्त्र, मेरुपृष्ठ यन्त्र, पाताल यन्त्र, मेरुप्रस्तार यन्त्र, कूर्मपृष्ठ यन्त्र, यन्त्रों में निहित तत्त्व : यन्त्रों में निहित तथ्यों का प्रभाव, विधान और परिणाम के आधार पर यन्त्रों का वर्गीकरण : रेखात्मक यन्त्र, आकृति-मूलक यन्त्र, उपयोगिता के आधार पर वर्गीकरण ।	
चतुर्थ रश्मि	यन्त्र-निर्माण का विधान	३०
	रचनाकाल की अनुकूलता : अनुकूल महीना, नक्षत्र, तिथि, दिन, विशेष समय, कालखण्ड, यन्त्र-लेखन : सामान्य विधि, कलम, स्याही, अन्य प्रासंगिक मसि, कागज, विशेष नियम ।	
पंचम रश्मि	अक्षरांक यन्त्र	४१
	भाग्यवर्धक यन्त्र, रोग-निवारक यन्त्र, उदरविकार शामक यन्त्र, कर्णकण्ठ-निवारक यन्त्र, गर्भ-स्तम्भन यन्त्र, माता (प्रेषक)	

शान्तिकर यन्त्र, स्वप्नभय-निवारक यन्त्र, बालरक्षा यन्त्र, बेकारी निवारक यन्त्र, शिव-सूत्र यन्त्र : आपदानाश के लिए, शत्रुभय निवारण हेतु, रोग-शान्ति के लिए, आकर्षण के लिए, कामना-सिद्ध-हेतु, सर्वदा साधनीय उपाय, व्यापारवर्धक यन्त्र, स्वप्नदोष निवारक यन्त्र, ब्रणनाशक यन्त्र, विवाहकर यन्त्र, सर्वकार्य साधक यन्त्र, सुख-शान्तिदायक ओंकार यन्त्र, ऋद्धिकारक यन्त्र, लक्ष्मी-वर्धक ह्रींकार यन्त्र, पंचदशी अर्थात् पन्द्रहिया यन्त्र, पंचदशी यन्त्र के विविध प्रयोग, शत्रुनाश के अन्य यन्त्र, पंचदशी यन्त्र का संख्या-प्रभाव, यन्त्र-लेखन का सरल विधान : पंचदशी यन्त्र के विविध लेखन-क्रम, बीजमंत्राकृति पंचदशी यन्त्र, लिखे गये यन्त्रों की सिद्धि-विधि ।

षष्ठ रश्मि विंशंक महायन्त्र

७८

बीसा यन्त्र का रचना-विधान, बीसा यन्त्र की रचन-सामग्री, मन्त्र-विनियोग, न्यास, मूलमन्त्र, वर्जनायें, बीसा यन्त्र के विविध रूप : श्री विष्णु बीसा यन्त्र, श्रीकृष्ण बीसा यन्त्र, श्रीदुर्गा नवार्ण बीसा यन्त्र (१), (२), (३), कष्टनिवारक सिद्ध बीसा यन्त्र, श्रीलक्ष्मी बीसा यन्त्र, नवकोष्टक बीसा यन्त्र, लक्ष्मीदाता बीसा यन्त्र, लक्ष्मीदाता सिद्ध बीसा यन्त्र, षट्कोण गर्भ समंत्र बीसा यन्त्र, स्वस्तिक बीसा यन्त्र, मुस्लिम सम्प्रदाय का बीसा यन्त्र, अष्टसिद्धिप्रद बीसा यन्त्र, अष्टांग बीसा यन्त्र : रविवार का अनुष्ठान, सोमवार का अनुष्ठान, मंगलवार का अनुष्ठान, बुधवार का अनुष्ठान, गुरुवारीय अनुष्ठान, शुक्रवार का अनुष्ठान, शनिवार का अनुष्ठान, हरसिद्धि बीसा यन्त्र, बाला त्रिपुरा सुन्दरी बीसा यन्त्र ।

सप्तम रश्मि रोगनिवारक अंक यन्त्र

१०८

मधुमेह निवारक यन्त्र, अतिसार निवारक यन्त्र, नाभिस्थापक यन्त्र, नाभिस्थापक लघु यन्त्र, बालकष्ट निवारक यन्त्र (पचासा

यन्त्र), कुदृष्टिनाशक यन्त्र, नहरुआ नाशक यन्त्र, उदरपीडा-
नाशक यन्त्र, अर्शनाशक यन्त्र, प्रसव-कष्ट निवारक यन्त्र, मृगी-
नाशक यन्त्र, प्रसव-कष्टनाशक पंचदशी यन्त्र, क्लेशहरण बत्तीसा
यन्त्र, कान्ति और श्रीवर्धक चौतीसा यन्त्र, ज्वर निवारक यन्त्र ।

अष्टम रश्मि

अन्य अंक-यन्त्र

१२४

सर्वसुखदायक पैसठिया यन्त्र, अड़सठिया यन्त्र, बहत्तरिया यन्त्र,
अस्सीया यन्त्र, भूतबाधानाशक यन्त्र, सुख-शान्तिदायक यन्त्र,
गृहकलहनाशक यन्त्र, सन्तानदाता यन्त्र, सिद्धिदाता यन्त्र, प्रेत-
बाधानाशक यन्त्र, सन्तानदाता यन्त्र, विजय-लक्ष्मीदायक यन्त्र,
व्यापार-वृद्धिकारक यन्त्र, लक्ष्मीप्रद यन्त्र, सम्मानदायक यन्त्र,
लाखिया यन्त्र (१), (२), जयपताका सिद्धि यन्त्र, विजयपताका
यन्त्र, संकटमोचन यन्त्र, विजय यन्त्र (१), (२), चौसठ योगिनी
यन्त्र (१), (२) ।

नवम रश्मि

विविध देवताओं के यन्त्र

१५२

श्रीगणेश यन्त्र : विनियोग, ऋष्यादिन्यास, करन्यास, हृदयादि-
न्यास, श्रीगणेश कवच, श्रीगणेश मन्त्र, श्रीभैरव यन्त्र : विनियोग
ऋष्यादिन्यास, करन्यास, षडंगन्यास, मन्त्रन्यास, भैरव कवच,
महामृत्युञ्जय यन्त्र, मृतसंजीवनी यन्त्र, सूर्य यन्त्र : विनियोग,
ऋष्यादिन्यास, करन्यास, हृदयादिन्यास, ध्यान, कवच, मन्त्र,
मंगल यन्त्र, कार्तवीर्यार्जुन यन्त्र : विनियोग, ऋष्यादिन्यास,
करन्यास, हृदयादिन्यास, ध्यान, श्रीकार्तवीर्यार्जुन द्वादश नामादि
स्तोत्र, कालीयन्त्र : विनियोग, ऋष्यादिन्यास, करन्यास
हृदयादिन्यास, ध्यान, कवच, जप-मन्त्र, तारा यन्त्र : विनियोग,
ऋष्यादिन्यास, करन्यास, हृदयादिन्यास, ध्यान, कवच, जप-मन्त्र,
महात्रिपुर सुन्दरी यन्त्र : ऋष्यादिन्यास, करन्यास, हृदयादि-
न्यास, ध्यान, कवच, जप-मन्त्र, भुवनेश्वरी यन्त्र : विनियोग,
ऋष्यादिन्यास, करन्यास, हृदयादिन्यास, ध्यान, कवचपाठ, भैरवी

यन्त्र : विनियोग, ऋष्यादिन्यास, ध्यान, कवचपाठ, मन्त्र, छिन्नमस्ता यन्त्र : विनियोग, ऋष्यादिन्यास, करन्यास, हृदयादिन्यास, ध्यान, कवचपाठ, जप-मन्त्र, घूमावली यन्त्र : विनियोग, ऋष्यादिन्यास, करन्यास, हृदयादिन्यास, ध्यान, कवचपाठ, जप-मन्त्र, बगलामुखी यन्त्र : विनियोग, ऋष्यादिन्यास, करन्यास, हृदयादिन्यास, ध्यान, बगलामुखी यन्त्र (द्वितीय), मातंगी यन्त्र : विनियोग, ऋष्यादिन्यास, करन्यास, हृदयादिन्यास, ध्यान, कवचपाठ, जप-मन्त्र, महालक्ष्मी यन्त्र : विनियोग, ऋष्यादिन्यास, करन्यास, हृदयादिन्यास, ध्यान, कवच, श्रीमहालक्ष्मी कवच, जप-मन्त्र ।

दशम रश्मि अभिचार यन्त्र

२००

कण्टक यन्त्र, बन्धु-विद्वेषण यन्त्र, स्वामी सेवक विद्वेषण यन्त्र, उच्चाटन यन्त्र (१), (२), (३), (४), यात्रा स्तम्भन यन्त्र, मुख-स्तम्भन यन्त्र (१), (२), (३), वाक् स्तम्भन यन्त्र, दुर्भाग्यवर्धन यन्त्र, मारण यन्त्र ।

एकादश रश्मि यन्त्रों के स्फुट प्रयोग

२१२

राजवशीकरण यन्त्र, स्वामी वशीकरण यन्त्र, अधिकारी स्तम्भ यन्त्र, राजा मोहन यन्त्र, मृत्युंजय यन्त्र, गणपति यन्त्र, यन्त्र राज, पिशाच यन्त्र, कालानल यन्त्र, उच्छिष्ट पिशाच यन्त्र, जामदग्न्य यन्त्र, ललिता यन्त्र, रामा यन्त्र, कामराज यन्त्र, राकेश्वरी यन्त्र, वसुधा यन्त्र, सुशीला यन्त्र, मणिभद्र यन्त्र, त्रैपुरक यन्त्र, मानिनी वशीकरण यन्त्र, भयनाशक यन्त्र ।

प्रथम रश्मि

यन्त्र-साधना : प्रारम्भिक परिचय

यन्त्र क्या है ?

यन्त्र के विषय में सबसे पहले यह जान लेना आवश्यक है कि यन्त्र क्या है। कारण कि जबतक हम किसी वस्तु से परिचित नहीं हों, तबतक उसके विषय में अन्य कोई विवरण हमारे लिए लाभप्रद नहीं हो सकता। परिचय के पश्चात् ही हम उसकी ओर देखते-सोचते हैं और तदनुसार उसका उपयोग करते हैं।

‘यन्त्र’ के विषय में विद्वानों के अनेक मत हैं। किन्तु यदि गौर से देखा जाय, तो प्रत्येक मनीषी के कथन में मात्र कुछ शब्दों का अन्तर है, शेष भाव एक ही है। घूम-फिरकर सब एक ही बिन्दु पर पहुँचते हैं। भाषा की भिन्नता और शब्दों का चमत्कार भले ही हमें रोचक लगे; पर वास्तविकता यह है कि हम एक ही बात को थोड़े हेर-फेर के साथ कह रहे होते हैं।

यन्त्र क्या है, इस प्रश्न के उत्तर में कहा जा सकता है कि यन्त्र, मन्त्र का विकसित अर्थात् मूर्त रूप है।

मन्त्र

यन्त्र की व्याख्या में ऊपर ‘मन्त्र’ शब्द का प्रयोग हुआ है। यहाँ प्रश्न उठता है कि मन्त्र क्या है? इसका उत्तर कुछ इस प्रकार होगा—‘मन्त्र’ वह ध्वनि है, जो किन्हीं विशिष्ट वर्णों, अक्षरों के क्रमिक उच्चारण से उत्पन्न होती है। इन वर्णों, अक्षरों का संघटन एक विशेष क्रम से होता है। उद्देश्य विशेष की पूर्ति हेतु, किसी विशिष्ट देवता को संबोधित करने के लिए विशिष्ट अक्षरों को एक क्रम से जपना ही मन्त्र है। विभिन्न देवी-

देवताओं को संवेदित करके उनकी अनुकूलता पाने में सहायक, उनकी दैवी शक्तियों को जागृत करने वाले अनेक प्रकार के मन्त्र-यन्त्र भारतीय अष्ट्यात्म में सुलभ हैं।

मन्त्र-रचना सरल कार्य नहीं है। सहस्रों वर्ष पूर्व हमारे उन महर्षियों ने, जो तपोबल के आधार पर ईश्वरीय शक्तियों का सायुज्य प्राप्त कर चुके थे, जो अलौकिक दृष्टि से सम्पन्न थे, जो भूत-भविष्य के दृष्टा और व्याख्याता थे, इस मन्त्रों की रचना की थी।

इस सम्बन्ध में यह तथ्य स्मरणीय है कि इन अलौकिक शक्ति-सम्पन्न मन्त्रों की रचना उन्होंने स्वयं के लिए नहीं, सर्वसाधारण के लिए, लोक-कल्याण की भावना से की थी। अपने लिए वे क्या करते, और क्यों करते? वे तो स्वयं ही अद्भुत क्षमता सम्पन्न थे। इच्छा-मात्र से वे कुछ भी प्राप्त कर सकते थे। विश्व की समस्त भौतिक वस्तुयें उन्हें सुलभ थीं। वास्तव में वे त्यागी थे—निस्पृह। उन्हें वैभव-विलास का मोह नहीं था। परिवार, समाज या राजनीति से उन्हें कोई मतलब नहीं था। वे तो मात्र तपश्चर्या में ही जीवन व्यतीत करते थे। उनमें यदि कोई कामना शेष थी, तो यही कि समस्त मानव-समाज और समृद्ध हो। इसके लिए उन्होंने दैहिक, दैविक और भौतिक, तीनों प्रकार के, सुख-साधन जुटाने हेतु मानव को उद्बोधन-स्वरूप मन्त्र-विद्या प्रदान की थी।

कालान्तर में, मन्त्र-साधना की जटिलता को अनुभव करते हुए, परवर्ती महर्षियों ने 'तन्त्र' की रचना की। एक दृष्टि से, तन्त्र-शास्त्र उसी मन्त्र-शास्त्र का परिवर्तित-परिवर्धित रूप था।

मन्त्रों में केवल ध्वन्यात्मकता होती है। मन्त्र का जप (स्पष्ट अथवा मौन रूप में) यदि पूरे विधि-विधान के साथ न किया जाय, तो वह फलप्रद नहीं होता। किन्तु, वह विधि-विधान इतना जटिल तथा श्रमसाध्य—समय-साध्य होता है कि सामान्य व्यक्ति के बस की बात नहीं। इन्हीं कठिनाइयों के निवारणार्थ, तन्त्र का आविष्कार हुआ।

तन्त्र

मन्त्र अपने में एक देवता होता है। उसका जप, उसके वर्णों का

उच्चारण उसी देवता को संवेदित करके साधक के प्रति कृपा हेतु प्रेरित करता है। जटिलता की दृष्टि से श्रमसाध्य मानकर मन्त्र का एक सरल और सर्वसुलभ रूप प्रस्तुत किया गया—तन्त्र।

तन्त्र में मन्त्र के साथ कुछ भौतिक पदार्थों का प्रयोग करके एक ऐसी विधि प्रचलित की गयी, जो देवता-विशेष को साधक के अनुकूल करती थी। प्रकार-भेद से तन्त्र भी अनेक हैं। मन्त्रों द्वारा सम्पन्न किये जाने वाले षट्कर्म (दशकर्म भी) तन्त्र से भी सम्पादित होने लगे। विकास और विस्तार के साथ-साथ तन्त्रों का प्रयोग-क्षेत्र भी बढ़ा। शान्ति, पुष्टि, मोहन, वशीकरण और उच्चाटन, मारण आदि समस्त उद्देश्यों की पूर्ति हेतु तन्त्रों की रचना की गयी।

तन्त्र-साधना, मन्त्र की अपेक्षा अधिक सरल और व्यावहारिक थी। अतएव उसका प्रचार बहुत हुआ। यहाँ तक कि बौद्धकाल में तो यह साधना अपनी मर्यादा की चरम सीमा को लाँघ गयी और अन्ततः यही सीमोल्लंघन उसके लिए अभिशाप बन गया। वहीं से इसका पतन प्रारम्भ हुआ। कारण कि आध्यात्मिक लाभ की अपेक्षा उसे ऐन्द्रिक और भौतिक प्रयोजनों की पूर्ति के लिए, वैभव-विलासिता के लिए, राजनीतिक षड्यन्त्रों के लिए प्रयुक्त किया जाने लगा। साथ ही, इसकी साधना-पद्धति में सुधार और आविष्कार के नाम पर कुछ ऐसे परिवर्तन किये गये, जो जनसामान्य की रुचि, धारणा, संस्कृति और निष्ठा के विपरीत थे। फलतः तन्त्र-साधना उपेक्षित होने लगी। किन्तु यह बौद्ध-ताम्रिकों का दोष था कि उन्होंने साधना-मार्ग को विकृत-दूषित करना प्रारम्भ कर दिया। वस्तुतः तन्त्र-साधना शक्तिशाली, आशुफलप्रद और अपेक्षाकृत बहुजन सुलभ थी।

यन्त्र

उत्थान और पतन, आदि और अन्त, आगमन और प्रस्थान प्रकृति-नियन्त्रण के ये दोनों बिन्दु प्रत्येक क्षेत्र में अपरिहार्य हैं। इनका नकारा नहीं जा सकता। संसार-चक्र को गति देने में प्रमुख रूप से यही दोनों बिन्दु कार्यशील रहते हैं। उत्थान से पतन की पृष्ठभूमि बनती है, और पतन का अवसानकाल उत्थान को जन्म देता है।

ठीक यही स्थिति मन्त्र-तन्त्र की भी रही। मन्त्र अपने में सर्वश्रेष्ठ, सात्त्विक, सर्वमान्य और शाश्वत-साधना के आधार थे। उनका सरलीकृत रूप — तन्त्र जब परिवर्तन और संशोधन की अपेक्षा रखने लगा, तब महर्षि वर्ग ने 'यन्त्र' का आविष्कार किया।

यन्त्र भी वस्तुतः मन्त्र का परिवर्तित रूप है। यह मन्त्र-तन्त्र से इस प्रकार भिन्न कहा जा सकता है कि मन्त्र में जहाँ केवल ध्वनि-साधना (जप) का प्राधान्य है, वहीं तन्त्र में ध्वनि-साधना के साथ-साथ कुछ भौतिक वस्तुओं का प्रयोग भी होता है। अर्थात् तन्त्र-साधना मन्त्र-जपप्रधान न होकर वस्तु-प्रयोगप्रधान हो गयी। इसमें वस्तु मुख्य थी, मन्त्र गौण, जबकि मन्त्र-साधना में मन्त्र ही सबकुछ था— मुख्य भी, गौण भी। यन्त्र में इन दोनों का सामंजस्य करते हुए एक तीसरा आयाम उभारा गया— चित्रात्मकता। इस प्रकार, साधना की यह तीसरी पद्धति अपना एक नया विधान लेकर प्रचलित हुई— मन्त्र भी, भौतिक वस्तुओं का प्रयोग भी और चित्रात्मकता भी। अर्थात् मन्त्र-तन्त्र के संयुक्त रूप में कुछ नया मिलाकर 'यन्त्र' का आविष्कार किया गया। तन्त्र-मन्त्र के साथ जोड़ी गयी यही चित्रात्मकता मन्त्र की विशिष्टता है।

यन्त्र का चित्रांकन मुख्यतः रेखाओं पर आधारित रहता है। यों, देखने में यन्त्र आड़ी-तिरछी रेखाओं और कुछ त्रिकोण-चतुर्कोण घरों, बिन्दुओं का अस्पष्ट, अर्थहीन चित्र होता है; किन्तु वास्तविकता इससे भिन्न है। बिन्दु, वर्ग, त्रिकोण और सरल-वक्र रेखाओं का वह समूह शुद्ध वैज्ञानिक पद्धति पर आधारित प्रतीक-साधना का एक माध्यम होता है।

यन्त्र की प्रत्येक रेखा, प्रत्येक वर्ग, बिन्दु और त्रिकोण किसी-न-किसी देवशक्ति का परिचायक होता है। विधिपूर्वक आह्वान-पूजन करने से उस देवता की अनुभूति उस यन्त्र में होने लगती है और साधक चमत्कारिक ढंग से अभीष्ट लाभ प्राप्त कर लेता है।

यन्त्र यद्यपि प्रतीक है, तो भी वह साकार एवं स्वाभाविक होता है। जिस प्रकार हम बिजली और हवा को देख नहीं पाते, लेकिन उसकी शक्ति का उसके वेग और स्पर्श-प्रभाव का अनुभव करते हैं, ठीक उसी प्रकार यन्त्र का सामान्य-सा दीखने वाला रेखाचित्र वस्तुतः असामान्य शक्तियों का

आगार होता है। वैसे भी, प्रतीक को मूल वस्तु का सूक्ष्म रूप माना जाता है, जो प्रकारान्तर से मूल वस्तु की शक्ति अपने में सँजोये रहता है। उस शक्ति के प्रभाव से साधक विभिन्न उद्देश्यों की पूर्ति कर सकता है।

साधना के इन तीनों रूपों—मन्त्र, तन्त्र और यन्त्र—में निहित एक सत्य यह भी है कि इनकी प्रस्तुति, इनकी रचना केवल अभीष्ट-पूर्ति के लिए की गयी है। यहाँ 'अभीष्ट' शब्द बहुत व्यापक है। एक व्यक्ति का अभीष्ट 'सर्वजन सुखाय' होता है, दूसरे का केवल 'व्यक्ति-प्रधान'। एक का अभीष्ट जहाँ उसके लिए परम हितकारक है, वहीं दूसरे के लिए वह कष्टप्रद, हानिकर और सर्वनाशक हो जाता है। मानव-जीवन की इसी विषमता को दूर करने के लिए भारतीय दर्शन सदैव त्याग, तपस्या, परोपकार, दया, धर्म और समष्टि की हित-चिन्तना को वरीयता देता रहा है। यहाँ की आध्यात्मिक साधना का मूल उद्देश्य यही था। किन्तु कालान्तर में निरन्तर बढ़ती गयी भौतिकता ने व्यक्तिवाद को बढ़ावा दिया; फलतः समाज में वर्गभेद पनपा और 'अौचित्य' की परिभाषा विवादग्रस्त हो गयी। अस्तु; यन्त्र-साधना ने अपने उद्भव के पश्चात् प्रगति और प्रसार के अनेकानेक आयाम देखे। यद्यपि, इसे तन्त्र का जैसा विस्तृत प्रसार-क्षेत्र नहीं मिल पाया; किन्तु फिर भी यह अपवादों से मुक्त रही और व्यावहारिक जगत् में इसे गौरव भी अधिक प्राप्त हुआ। विभिन्न स्थानों में आज भी कितने ही यन्त्र स्थापित हैं, जो इस साधना पद्धति की महत्ता, विश्वसनीयता, प्रभाव और शाश्वत-शक्ति का प्रमाण दे रहे हैं।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि यन्त्र-साधना (वैसे, मन्त्र और तन्त्र भी) शक्ति की साधना है। अर्थात् यन्त्र-साधना के द्वारा एक विशिष्ट शक्ति प्राप्त की जाती है और उसका प्रयोग अभीष्ट-पूर्ति के लिए होता है। जहाँ भौतिक उपाय सफल नहीं होते, वहाँ यह आध्यात्मिक शक्ति अपना चमत्कार दिखाती है।

उदाहरण के लिए, हम किसी को अपनी ओर आकृष्ट करना चाहते हैं; उसे वशीभूत करने के इच्छुक हैं, या उसकी स्मृति और शान्ति को नष्ट करके उसे विक्षिप्त बना देना चाहते हैं, असाध्य रोग से मुक्ति पाने की कामना रखते हैं, कारोबार-व्यापार में आ रही अड़चनों को दूर करना

चाहते हैं; अथवा इसी प्रकार की अन्य किसी आवश्यकता से प्रभावित हैं; किन्तु प्रयास करके भी (भौतिक, व्यावहारिक प्रयास) सफल नहीं हो पाते। ऐसी विवशता की स्थिति में जबकि हमारे समस्त प्रयास निष्फल सिद्ध हो रहे हों, आध्यात्मिक साधना करके—तन्त्र-मन्त्र का अवलम्ब लेकर हम सरलता से इन प्रयासों में सफल हो सकते हैं। किन्तु यहाँ एक प्रतिबन्ध है—भौतिक प्रयासों में केवल वस्तु-प्रयोग की प्रधानता होती है, किन्तु आध्यात्मिक साधना में भावात्मक बुद्धि, आस्था, नियमपालन, समय का प्रतिबन्ध तथा निष्ठा का प्राधान्य होता है।

तन्त्र, मन्त्र, यन्त्र का निर्दोष प्रयोग अद्भुत प्रभावशाली और चमत्कार-पूर्ण होता है। इनके द्वारा एक ऐसी अदृश्य शक्ति उत्पन्न हो जाती है, जो साधक की कामनानुसार सम्बन्धित व्यक्ति, वस्तु, वातावरण और भौतिक उपादानों को प्रभावित करके तदनुकूल परिवर्तित कर देती है।

यन्त्र-साधना का यही चमत्कार उस अजेय रहस्य की सृष्टि करता है, जिसकी व्याख्या कर पाने में, प्रगति के चरमशिखर पर आसीन, आज का भौतिक विज्ञान परास्त हो जाता है।

अध्यात्म का महत्त्व

भौतिक यन्त्रों की अपेक्षा आध्यात्मिक यन्त्रों की सूक्ष्म रचना-प्रक्रिया, अदम्य प्रभावशीलता और क्लिष्ट साधना-पद्धति वस्तुतः आज के वैज्ञानिकों को दिग्भ्रमित कर रही है। राकेट, राडार और मिसाइल जैसे आधुनिक यन्त्र सामान्य जन के लिए भले ही विस्मयकारी हों, पर जिसने भारतीय संस्कृति का इतिहास पढ़ा होगा, यहाँ के धर्म, दर्शन और अध्यात्म में जिसकी आस्था और रुचि होगी, वह जानता है कि आज के ये तथाकथित दिव्यास्त्र, पूर्व मनीषियों की साधना के निर्माल्य से भी कम हैं; उनके आविष्कारों का उच्छिष्ट हैं। ये अस्त्र-शस्त्र तथा अन्य आविष्कार मात्र भौतिक विज्ञान पर आधारित हैं, जबकि आध्यात्मिक यन्त्रों की आधार-भूमि मन्त्र-शक्ति रही है। मन्त्र, तन्त्र और इन दोनों का मिश्रित, विकसित रूप यन्त्र वास्तव में अदृश्य किन्तु दिव्य शक्ति से सम्पन्न रहता है।

भौतिक यन्त्रों की प्रभावशीलता को सुरक्षित रखने के लिए जिस प्रकार

उनके अवयवों की सुरक्षा आवश्यक होती है; बारूद, माइन, पेट्रोल, तार, बैट्री, बल्ब, कम्प्रेसर, लीवर, गियर, एक्सल, ह्वील आदि का अपने स्थान पर सही होना आवश्यक है, ठीक उसी प्रकार आध्यात्मिक यन्त्रों में, जो सामान्यतः किसी धातु के पत्तर, भोजपत्र या कागज पर रेखांकित होते हैं, भी सुरक्षात्मक दृष्टिकोण आवश्यक होता है। इनकी सुरक्षा के लिए बारूद, पेट्रोल नहीं, इनकी संरचना और निर्माण-सामग्री का असली होना आवश्यक है। काँसे की थाली में बने हुए किसी साधारण वर्गाकार रेखांकन को देखकर हँसिये मत, उसकी उपेक्षा न कीजिये। यदि आपका वैज्ञानिक मस्तिष्क उसके प्रति श्रद्धालु नहीं होता, आस्था नहीं रखता, तो इसका कारण यह है कि उसकी शिक्षा-दीक्षा में कभी आध्यात्मिक प्रसंग नहीं आये। वह जानता ही नहीं कि मन्त्र क्या है! भले ही उसके पास ऊँची-से-ऊँची डिग्री हो; पर एक श्लोक का शुद्धतापूर्वक उच्चारण करने में वह पसीने से तरबतर हो जायेगा। उसकी मानसिकता ही कुछ इस प्रकार से निर्मित होती है कि वह भारतीय साधना को हेय दृष्टि से देखता है। उसका यही अविश्वास मन्त्र के छत्रनि-विज्ञान को, तन्त्र के पदार्थ-विज्ञान को और यन्त्र के गणित-विज्ञान को, जो शत-प्रतिशत तर्कसम्मत है, मान्यता नहीं दे पाता। आज के तथाकथित शिक्षितों और विज्ञानवेत्ताओं का कथन है—

यन्त्र-तन्त्र और मन्त्र यह सब अन्धविश्वास की बातें हैं। इस तरह के षड्यन्त्रों से देश का पतन होता है। उनपर आस्था रखने वाले व्यक्ति आलसी, कामचोर और अन्ततः अपराधी अथवा दरिद्र हो जाते हैं। यदि यह सारा प्रचार सबल होता, वास्तव में इसमें कुछ शक्ति होती तो देश का इतना पतन नहीं होता। धन और धर्म दोनों में समान भाव से समर्पित होना सम्भव नहीं है। असल में यह सबकुछ ब्राह्मणों-पण्डितों का षड्यन्त्र है, जिन्होंने अध्यात्म की और तन्त्र-मन्त्र की ओट में, आराम से अपने निर्वाह की व्यवस्था कर रखी थी।

अस्तु; हम अगले पृष्ठों में यन्त्र विद्या पर विस्तार से प्रकाश डाल रहे हैं, जिससे इसकी प्राचीनता प्रमाणित हो जायेगी।



द्वितीय रश्मि

यन्त्रों की रचना और रूपाकार

यन्त्र-रचना की पृष्ठभूमि

प्राचीन ग्रन्थों में अनेक प्रकार के यन्त्रों का उल्लेख है। उनके चित्र देखकर बुद्धि चकरा जाती है। उनका वर्ण-संयोजन, अंक-निर्धारण, रेखांकन, वलय, वृत्त और बिन्दु का निर्माण, बीच-बीच में मन्त्रों का प्रयोग, यह सब इतना विचित्र और जटिल प्रतीत होता है कि मस्तिष्क की नसें झनझना उठती हैं।

यन्त्रों में बनाये जाने वाले त्रिभुज, चतुर्भुज और वृत्त आदि केवल अपनी रचना के कारण ही विचित्र प्रतीत नहीं होते; बल्कि इनके निर्माण में प्रयुक्त मानसिक एकाग्रता भी अन्तर्मुखी शक्ति के रूप में प्रकट होती है। और, उस शक्ति का यह प्रभाव होता है कि बिना उसकी व्याख्या को समझे भी, दर्शन मात्र से ही अनेक प्रकार के भौतिक कार्य चमत्कारिक रूप में सम्पन्न हो जाते हैं। यह स्थिति कुछ इस तरह की होती है, जैसे बिजली का एक तार करेण्ट से जोड़कर कहीं डाल दिया जाय, तो जाने-अनजाने उसे जो भी छुयेगा, उसकी शक्ति से प्रभावित होगा। यन्त्र इस कसौटी पर खरे उतरते हैं।

यन्त्र-रचना का आधार केवल कल्पना या अन्धेरे की ढेलेबाजी नहीं है। वह प्रकृति के सूक्ष्म रहस्यों, पदार्थवाद के भौतिक तथ्यों और पर्यावरण के गम्भीर परिवर्तनों का सार-संकेत है। यन्त्र में प्रचण्ड आणविक शक्ति निहित रहती है, जो अनुकूल माध्यम, विधि-सम्मत अनुष्ठान-प्रयोग पाकर असम्भव का भी सम्भव कर दिखाती है।

जिस प्रकार रत्न अपने अस्तित्व में अद्भुत क्षमता सँजोये रहते हैं,

ठीक वैसे ही यन्त्रों में भी, जो बाह्य दृष्टि से सामान्य रेखांकन मात्र प्रतीत होते हैं, चमत्कारी प्रभाव छिपा रहता है।

यन्त्र : जड़ और चेतन का योग

यन्त्रों की आकृतियाँ किसी सूक्ष्म लोक की प्रतीति की आधारभूमि हैं। उनका अदृश्य जगत् के अलावा प्रत्यक्ष जगत् में भी कुछ अस्तित्व होता है। यन्त्रों के रूपाकार अपने में एक गूढ़ अर्थ और अखण्ड प्रभाव सँजोये रहते हैं। यन्त्रों की साधना-प्रक्रिया में ध्वनि-शक्ति का, इच्छा-शक्ति का और भौतिक उपादानों का संयुक्त रूप में उत्पन्न विद्युतीय प्रभाव संयुक्त रूप में क्रियाशील होता है। यन्त्र-साधना में सूक्ष्म और स्थूल की साधना का बहुत ही सन्तुलित रूप दृष्टिगत होता है। किसी भी यन्त्र की साधना की जा रही हो, निश्चित है कि उसमें जड़ और चेतन दोनों शक्तियाँ कार्यरत होंगी—जड़शक्ति भौतिक उपादानों की और चेतनशक्ति साधक की। व्यावहारिक जीवन में अकेला मनुष्य जो कार्य नहीं कर पाता, यन्त्र-साधना में भौतिक पदार्थों के सक्रिय सहयोग (जड़शक्ति के साथ मिलकर) से वह सब सरलता से कर लेता है।

भारतीय साधना-पद्धति की यह विशेषता है कि उसमें यन्त्रों को स्थूलता (मांसलता—विस्तार) न दी जाकर, रेखाओं को ठोस या घने रूप में प्रस्तुत न करके, बीजशक्ति को ऊर्जस्वित किया गया है। बीजशक्ति के द्वारा वह सफलता के समस्त आयाम, वे उपलब्धियाँ प्राप्त कर लेता है, जो दैनिक जीवन में भौतिक प्रयासों से शतांश में भी नहीं प्राप्त हो सकतीं।

प्रतीक-विधान

हम देखते हैं कि भारतीय तन्त्र-मन्त्र साधना में वर्णित यन्त्रों का निर्माण एक प्रकार के ग्राफिक चित्रों की भाँति किया गया है। ऐसा क्यों? वस्तुतः यह एक रहस्यपूर्ण तथ्य है। यन्त्रों की यह रूपरेखा, ये चिह्न विभिन्न शक्तियों, देवताओं, लोकों और अनुभूतियों के प्रतीक हैं, जो अति सूक्ष्म रूप में रहते हुए भी, पूरी त्वरा के साथ कार्यरत रहते हैं। इनका कार्य-प्रभाव ही यन्त्र की शक्ति को प्रमाणित करता है।

भौतिक जगत् में कुछ ऐसे पदार्थ होते हैं, जो स्वयं में तो निष्क्रिय-जैसे रहते हैं; परन्तु किसी दूसरे के सम्पर्क में आते ही क्रियाशील होकर कुछ-का-कुछ कर डालते हैं। फासफोरस एक ऐसा ही पदार्थ है। वह स्वयं में नितान्त जड़ है—निष्क्रिय; किन्तु वायु का स्पर्श होते ही भभक उठता है और भयंकर अग्निकाण्ड की पृष्ठभूमि तैयार कर देता है। एक और भी ऐसा ही पदार्थ है, पोटेशियम परमैंगनेट। 'लाल दवा' के नाम से प्रसिद्ध यह कीटाणुनाशक ओषधि पानी में घुलने पर उसे गुलाबी कर देती है। पानी का स्पर्श उसकी घुलनशीलता को सक्रिय करके अपने में सम्पृक्त कर लेता है। किन्तु उसी पोटेश में पाँच बूँद ग्लेसरीन टपका दी जाय तो वह माचिस की तीली की तरह जलने लगती है।

ठीक यही प्रतिक्रिया यन्त्रों में प्रयुक्त भौतिक पदार्थों में भी होती है। केसर, गोरोचन, कपूर जैसे पदार्थ, जो स्वयं में नितान्त जड़ और निष्क्रिय प्रतीत होते हैं, यन्त्र में प्रयुक्त होते ही—दूसरे पदार्थों और यन्त्र की रेखाओं का स्पर्श पाते ही सक्रिय हो उठते हैं। इस प्रकार यन्त्रों में प्रयुक्त पदार्थ पारस्परिक सम्पर्क से एक प्रकार की अवर्णनीय ऊष्मा उत्पन्न कर देते हैं। भले ही यन्त्र की वह ऊष्मा हमारे अनुभव, दर्शन और स्पर्श में न आती हो; पर उसके अस्तित्व को नकारा नहीं जा सकता। वह अतिशय प्रभावशाली और चमत्कारपूर्ण होती है। साधक के उद्देश्य की पूर्ति करने में प्रमुख कारक वही शक्ति रहती है। उसके अस्तित्व का बोध तब होता है, जब साधक देखता है कि यन्त्र-साधना के बाद उसका उद्देश्य पूरा हो गया है।

भौगोलिक मानचित्रों और मशीनों के ग्राफ की भाँति, यद्यपि यन्त्र की रचना प्रतीक रूप में ही की जाती है; किन्तु वह पूर्णतया सार्थक और सटीक होती है। अपनी सूक्ष्मता में भी वह वास्तविक से अधिक स्पष्ट, प्रभावशाली और यथार्थपरक होती है।

यन्त्र और मूर्ति

भारतीय मूर्तिपूजा-पद्धति में बहुत गूढ़ रहस्य निहित है। हमारे यहाँ जो अनेक प्रकार के देवविग्रहों की रूपाकृतियाँ कल्पित की गयी हैं वह

चाक्षुष-तुष्टि अथवा कौतूहल के लिए नहीं हैं, वरन् उसका आधार सम्बन्धित देवता का मन्त्र है—उसका स्त्रोत। वास्तव में प्रत्येक देवता की स्तुति का, उसके चिन्तन का महर्षियों ने जो मन्त्र प्रणीत किया था, उसीके आधार पर (उसीके अर्थ-प्रभाव को रूपायित करने के लिए) उस प्रकार के देवविग्रहों की कल्पना कर ली गयी है। मानव की बुद्धि जड़ और स्थूल है, जबकि मन्त्र सूक्ष्म और चैतन्य हैं। इस प्रकार मन्त्र और मनुष्य, साध्य और साधक, जड़ और चेतन, स्थूल और सूक्ष्म के एकीकरण हेतु मन्त्रों के साथ मूर्तियों का और मूर्तियों के साथ यन्त्रों का समन्वय किया गया है।

जहाँ तक आध्यात्मिक सिद्धि का प्रश्न है, मन्त्र द्वारा यह सर्वाधिक प्राप्त होती है। तन्त्र और यन्त्र के द्वारा भौतिक सिद्धियों का मार्ग प्रशस्त होता है। ये दोनों साधनायें व्यावहारिक जगत् के लिए हैं, संसारीजन इनके द्वारा सिद्धिलाभ सरलता से पा सकते हैं; जबकि ज्ञानी, विवेकी, तपस्वी और जागतिक माया-मोह से परे रहने वाले व्यक्ति मन्त्र-साधना द्वारा शाश्वत शान्ति-लाभ अर्जित करते हैं।

तृतीय रश्मि

यन्त्रों का वर्गीकरण

मन्त्र शास्त्र के अन्तर्गत, मुख्यतः षट्कर्मों के निष्पादन हेतु ही मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र की उपयोगिता सिद्ध की गयी है। साधक अपनी रुचि और आवश्यकता के आधार पर साधना में प्रवृत्त होता है। चूँकि हमारा वर्ण्य-विषय यन्त्र है; अतएव मन्त्र-तन्त्र को परोक्ष रखकर हम यन्त्र-साधना के विषय में ही इस अध्याय की सामग्री प्रस्तुत करेंगे। (मन्त्र तथा तन्त्र के विस्तृत विवेचन के लिए पढ़ें लेखक की कृति 'मन्त्र-शक्ति' तथा 'तन्त्र-शक्ति'।)

सांसारिक दृष्टि से मानव समुदाय को जिन प्रमुख उद्देश्यों की पूर्ति का प्रयास करना पड़ता है, वे निम्नलिखित षट्कर्मों में निहित रहते हैं—

- (१) शान्ति अथवा पुष्टिकर्म,
- (२) आकर्षणकर्म,
- (३) वशीकरणकर्म,
- (४) स्तम्भनकर्म,
- (५) उच्चाटनकर्म, और
- (६) मारणकर्म।

शान्तिकर्म

शान्ति अथवा पुष्टि कहे जाने वाले कर्मों के अन्तर्गत वे कार्य आते हैं, जो शुद्ध, सात्त्विक और शाश्वत लक्ष्य के लिए काम्य होते हैं। मोक्ष-प्राप्ति, देव-सामीप्य, देव-दर्शन, देव-कृपा, रोगमुक्ति, शान्ति-लाभ, धर्मानुराग, यश, परोपकार, धर्मचर्या, व्रत-पूजा-तपस्या आदि की लालसापूर्ति हेतु जो प्रयास किये जाते हैं, वे शान्तिकर्म अथवा पुष्टिकर्म में परिगणित होते हैं।



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.

उच्चाटनकर्म

किसी की मनोशान्ति, किसी का वैचारिक स्थैर्य, किसी की गम्भीरता, तन्मयता को नष्ट करके उसके चित्त को चञ्चल, अस्थिर, उचटा हुआ बना देना उच्चाटनकर्म कहलाता है। यह भी निन्दनीय कर्म है। यह स्थिति कभी-कभी प्राण-संकट उत्पन्न कर देती है। उच्चाटन की मनोदशा में वह व्यक्ति अथवा प्राणी शान्त-स्थिर होकर एक स्थान पर टिक नहीं पाता, भागा-भागा फिरता है। अन्ततः वह अनिद्रा का रोगी होकर विक्षिप्तावस्था को पहुँच जाता है। प्रायः यही विक्षिप्तावस्था उसकी मृत्यु का कारण बनती है। इसीलिए उच्चाटनकर्म की निन्दा की गयी है, कारण कि यह क्रिया अन्ततः एक हत्या की आधारभूमि ही तैयार करती है।

मारणकर्म

इसका जैसा नाम है, ठीक वैसा ही कर्म है—किसी की मृत्यु का आधार प्रस्तुत करना।

मारणकर्म को घोर अभिचारकर्म माना जाता है। इसके प्रयोग को केवल एक स्थिति में क्षम्य कहा गया है—जब कोई आततायी किसी या किन्हीं निर्दोष व्यक्तियों, समाज, समुदाय के लिए प्राण-संकट उत्पन्न कर रहा हो; जैसे कोई विदेशी-विधर्मी आक्रान्ता बलपूर्वक अत्याचार के लिए सन्नद्ध हो या अत्याचार कर रहा हो, तब इसका प्रयोग (वह तन्त्र, मन्त्र, यन्त्र किसी भी रूप में हो) किया जा सकता है।

यन्त्रों के प्रकार

पूर्व वर्णित षट्कर्मों की पूर्ति के लिए जिन यन्त्रों का निर्माण एवं पूजन किया जाता है, वे कई रूपों में उपलब्ध होते हैं। प्राचीन ग्रन्थों में विभिन्न प्रकार के यन्त्रों का उल्लेख करते हुए बताया गया है कि यन्त्रों की प्रमुख श्रेणियाँ कौन-कौन-सी हैं। यह वर्गीकरण यन्त्रों की रूपाकृति, गणितीय पद्धति, देवार्चन, बीजमन्त्र-साधना को दृष्टिगत रखकर ही किया गया है। यन्त्र-साधना के जिज्ञासु और प्रबुद्ध जानार्थियों के लिए ऐसा वर्गीकरण निश्चित रूप से लाभकारी रहता है।



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.

पशु-पक्षी, वृक्ष आदि के चित्र बनाये जाते हैं। बहुधा इनमें देव-प्रतिमाओं को चित्रित किया जाता है। इस प्रकार के अंकन में गणपति, यक्ष-यक्षिणी, मातंगिनी, छिन्नमस्ता, अश्व, गज, मृग, वृष, सर्प तथा काक, मयूर आदि विभिन्न दैवी-पक्षियों के चित्र अंकित किये जाते हैं। मछली और नक्र भी चित्रित किये जाते हैं।

रेखात्मक यन्त्रों को चार श्रेणियों में विभक्त किया गया है—

- (१) बीजमन्त्रयुक्त यन्त्र,
- (२) मन्त्रवर्णयुक्त यन्त्र,
- (३) अंकगर्भित यन्त्र, और
- (४) मिश्र यन्त्र।

(१) बीजमन्त्रयुक्त यन्त्र—किसी भी देवता का संक्षिप्त रूप उसका मन्त्र होता है, और प्रत्येक मन्त्र का संक्षिप्त रूप उसका बीज होता है। ऐसे बीजमन्त्र का अंकन जिस यन्त्र में किया जाता है उसे बीजमन्त्रयुक्त यन्त्र कहते हैं। यह सर्वाधिक शक्तिशाली यन्त्र होता है।

(२) मन्त्रवर्णयुक्त यन्त्र—जिन विशिष्ट वर्णों द्वारा मन्त्र का निर्माण होता है, उनसे युक्त यन्त्रों को मन्त्रवर्णयुक्त यन्त्र कहते हैं। ऐसे यन्त्र मन्त्र-शक्ति से सम्पन्न माने जाते हैं।

(३) अंकगर्भित यन्त्र—अंकों में देवताओं का वास है। कहा जा सकता है कि प्रत्येक अंक किसी-न-किसी देवता का प्रतीक है; उसका प्रतिनिधि है। अतः बहुत से यन्त्रों के निर्माण में 'देवस्थापना' के उद्देश्य से अंकों का प्रयोग किया जाता है। ऐसे यन्त्रों को 'अंकगर्भित यन्त्र' कहते हैं।

(४) मिश्र यन्त्र—जब किसी यन्त्र की रचना में उपर्युक्त तीनों तत्त्व प्रयुक्त हों, अर्थात् बीजाक्षर, मन्त्रवर्ण और अंक का प्रयोग किया जाय, वह मिश्रित अथवा मिश्र यन्त्र कहलाता है।

उपयोगिता के आधार पर वर्गीकरण

उपर्युक्त वर्गीकरण का आधार यन्त्र-रचना को ही माना जाता है। परवर्ती विद्वानों ने एक और वर्गीकरण प्रस्तुत किया, जो यन्त्र की उपयोगिता के आधार पर किया गया। इस श्रेणीकरण के अनुसार, कोई भी यन्त्र, वह



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.

समय पर उसके बलाबल की सूचना देने की क्षमता एकमात्र ज्योतिष विज्ञान में है। भौतिक विज्ञान इससे बहुत पीछे है...।”

अतएव, यन्त्र-साधना के सम्बन्ध में ज्योतिषसम्मत काल-निर्णय के इन प्रमुख आधारों का उपयोग करना निश्चित रूप से श्रेयस्कर, सफलता-दायी और निरापद रहेगा—

अनुकूल महीना

हम जिस उद्देश्य से यन्त्र-साधना करें उसके अनुकूल महीने का प्रयोग विशेष हितकर होगा। प्रत्येक महीने का अपना कुछ विशेष प्रभाव होता है। कार्य-कारण और समय-साधन का सम्बन्ध बहुत घनिष्ट है। अतः कार्य को प्रभावित करने वाले महीने में की गयी साधना का परिणाम विशिष्ट रूप में दृष्टिगोचर होता है। मनीषियों ने दीर्घकालीन अनुभव के आधार पर (उनका समस्त जीवन साधना और शोध में ही बीतता था) बताया है कि—“सुख-शान्ति, ग्रहदोष-निवारण, दीर्घ आयु जैसे उद्देश्यों की पूर्ति हेतु श्रावण; धन-प्राप्ति (अर्थलाभ) हेतु कुआर, वैशाख; मन्त्र-सिद्धि व धर्म-भावना के सम्बर्धन हेतु कार्तिक, अगहन और सर्वसिद्धि की कामनापूर्ति हेतु फाल्गुन तथा चैत्र मास विशेष अनुकूल होते हैं...।”

नक्षत्र

नक्षत्रों का प्रभाव अपने आप में अद्भुत है; किन्तु प्रत्येक नक्षत्र प्रत्येक कार्य के लिए अनुकूल नहीं होता। और, प्रतिकूल समय (समय की कोई भी इकाई) प्रायः कष्टदायक रहता है। कभी-कभी तो उसका दुष्प्रभाव भयंकर दुर्घटनाकारी भी हो जाता है।

वर्ष, मास और पक्ष की अपेक्षा नक्षत्र समय की छोटी तथा विशिष्ट प्रभावयुक्त इकाई होती है। अतएव यन्त्र-साधक को चाहिए कि वह नक्षत्र-विचार के समय इस पूर्व-निर्णय की सहायता लेकर अपने उद्दिष्ट की प्राप्ति-हेतु अनुकूल नक्षत्र का चुनाव करे—

“...ज्योतिष शास्त्र की मान्यतानुसार, ज्ञान-प्राप्ति के लिए शतभिषा, उत्तरा फाल्गुनी, रोहिणी; धनलाभ तथा लक्ष्मी की वृद्धि-हेतु हस्त, पुनर्वसु,



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.

हो, यन्त्र-रचना प्रारम्भ करे, यन्त्र-लेखन, सम्बन्धित मन्त्र का जाप, प्रतिमा का पूजन, ध्यान तथा अन्य क्रिया-व्यापार सब यथावत् नियमानुसार करता रहे। साधना-काल में प्रायः कुछ अनुभूतियाँ भी होती हैं—अलौकिक, दिव्य और रहस्यमयी। उन्हें किसी से कहना नहीं चाहिए। यदि कोई अवरोध, विघ्न आ रहा हो तो उससे भी नहीं घबराना चाहिए। उससे मुक्ति के लिए साधना में तन्मयता, उसमें प्रयोज्य वस्तुओं की शुद्धता को फिर से परख लेना अच्छा रहता है।

कलम

जिस लेखनी से यन्त्र लिखा जाता है, उसकी एक विशेष माप होती है। सामान्यतया यन्त्रों की रचना-विधि में इसका उल्लेख रहता है। उसी माप की कलम का प्रयोग करना चाहिए। किन्तु यदि कहीं ऐसा स्पष्ट निर्देश न हो तो आठ अंगुल लम्बी कलम का प्रयोग स्वीकृत किया गया है।

कलम की लम्बाई के बाद उसकी पदार्थगत उपयोगिता का भी महत्त्व होता है। एक ही कलम प्रत्येक कार्य के लिए यन्त्र-रचना में प्रभावी नहीं होती। इसके लिए आवश्यक है कि यन्त्र के साथ निर्देशित कलम का प्रयोग किया जाय।

प्राचीन ग्रन्थों में यन्त्र-निर्माण की विधि के अन्तर्गत कलम के सम्बन्ध में कहा गया है कि—

“...यन्त्र विशेष के लिए विशेष प्रकार की कलम की व्यवस्था न दी गयी हो तो अपने प्रयोजनीय कर्म के अनुसार कलम का प्रयोग करना श्रेयस्कर है। कलम (लेखनी) का निर्देश साधक की वर्ण-व्यवस्था के आधार पर न होकर कार्य पर आधारित रहता है। शान्तिकर्म तथा पुष्टि-कर्म के लिए यन्त्र-रचना में पीपल की कलम उपादेय होती है। इसी प्रकार वशीकरण के लिए चमेली की; सम्मोहन के लिए सुवर्ण की; स्तम्भन कार्य-हेतु हल्दी की या ताँबे की; उच्चाटन-विद्वेषण और मारण में लोहे की कलम का प्रयोग सफलतादायक होता है। वैसे अन्य काष्ठ भी; जैसे अनार की टहनी, आक की टहनी, कनेर और गूलर की टहनी, कलम के लिए, प्रसंगानुसार उत्तम माने गये हैं।



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.

निर्देश यदि यन्त्र के साथ न मिल रहा हो तो किसी साधक से पूछ लेना चाहिए। जब कोई समाधान न मिल रहा हो तो सामान्य कागज या भोज-पत्र पर (यथासम्भव अभिचारकर्म न करें) यन्त्र की रचना की जा सकती है।

कुछ शुभ यन्त्र (शान्ति-पुष्टि कर्म वाले) स्फटिक, शालिग्राम, रत्न, अकीक जैसे पत्थरों पर अंकित किये जाते हैं।

यदि साधक स्वयं यन्त्र-रचना न करके किसी कारीगर से बनवा रहा है तो आवश्यक है कि साधक और वह कारीगर दोनों स्नान करके, शुद्ध कपड़े पहनकर, शुद्ध स्थान पर बैठें। साधक उस आधार (पत्थर या धातु-पत्र) पर पहले उपयुक्त स्याही से यन्त्र अंकित कर दे; फिर कारीगर की तिलक, अक्षत से पूजा करके, भोजन-जलपान कराये और दक्षिणा दे; तत्पश्चात् उससे यन्त्र-निर्माण का निवेदन करे। और तब कारीगर को परम-आस्था के साथ देवता का ध्यान करते हुए कार्य प्रारम्भ कर देना चाहिए।

विशेष नियम

यन्त्र-निर्माण के सम्बन्ध में यह सावधानी बराबर रखनी चाहिए कि—

- (१) स्थान एकान्त, स्वच्छ, शुद्ध व पवित्र हो।
- (२) आसपास शोरगुल, अश्लील या अशुभ दृश्य न हों।
- (३) भय, क्रोध, घृणा चिन्ता, कामुकता बढ़ाने वाले पदार्थ, दृश्य, स्वर, व्यक्ति वहाँ न हों।
- (४) घना अन्धेरा या खुली धूप का प्रकाश न होकर पर्याप्त छाया, प्रकाश, शान्ति और स्वच्छ वायु की सुविधा हो।
- (५) यन्त्र बन जाने पर उसकी विधिपूर्वक पूजा करके साधना में लग जाना चाहिए। यन्त्र का प्रदर्शन वर्जित है।





You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.

गर्भ-स्तम्भन यन्त्र

ओं	ओं	ओं	ओं
ओं	ओं	ओं	ओं
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं

यदि किसी स्त्री को गर्भस्राव, गर्भपात अथवा बन्ध्यत्व का कष्ट हो तो रविवार, मूल नक्षत्र के दिन यह यन्त्र भोजपत्र पर अष्टगन्ध से लिखकर, उस स्त्री के बायें हाथ पर बाँध देने से वह रोगमुक्त हो जाती है। गर्भरक्षा के लिए यह श्रेष्ठ यन्त्र है।

माता (चेचक) शान्तिकर यन्त्र

४	श्रीं	श्रीं	श्रीं
श्रीं	श्रीं	श्रीं	श्रीं
श्रीं	श्रीं	श्रीं	श्रीं
००	००	००	००

अष्टगन्ध की स्याही से पीपल के पत्ते पर इस यन्त्र को लिखकर, रसोईघर में झूले के ठीक ऊपर बाँध देने से, अथवा इसी प्रकार सात पत्तों पर लिखकर उन्हें दरवाजे पर (बीचोंबीच में, झालर की तरह) बाँध देने



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.

उपाय है।

रोग-शान्ति के लिए

उपर्युक्त विधि से यन्त्र का निर्माण करके उसकी पूजा करे तथा बाद में गले या भुजा पर धारण करने से सब तरह के रोगों से छुटकारा मिल जाता है।

आकर्षण के लिए

घर का कोई सदस्य रुठकर कहीं चला गया हो अथवा किसी भी कारण से परदेश से न लौट रहा हो, तो उसे बुलाने में यह यन्त्र चमत्कारिक प्रभाव दिखाता है। ऐसी दशा में इसकी प्रयोग-विधि इस प्रकार है—

पीपल के एक पत्ते पर (ऐसा सम्भव न हो, तो १६ पत्तों पर एक-एक) समस्त सूत्र लिखकर यन्त्र-रचना करे। लाल चन्दन की स्याही तथा अनार की फलम का प्रयोग करना चाहिए। 'देवदत्त' शब्द के स्थान पर उस व्यक्ति का नाम लिखें, जिसे बुलाना है। यदि यन्त्र १६ पत्तों पर लिखा गया है, तो उन सभी पर आहूत व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए। यन्त्र तैयार हो जाने पर (यह समस्त साधना किसी शुभ मुहूर्ते में ही करनी चाहिए) वे सभी पत्ते एक कोरी हाँडी (हाँडी टूटी, दरकी या दुरंगी, घब्वेदार न हो) में डाल दें। इसके पश्चात् किसी नदी, जलाशय से १४ ककड़ लाकर उन्हें भी उसी हाँडी में डाल दें और मिट्टी लेसकर उसका मुँह बन्द कर दें। पूजनोपरान्त उसे घूप दें, फिर उस हाँडी को प्रतिदिन प्रातः-सायं १४ बार हिलायें और चौदहों सूत्र बोलते रहें। सूत्र-समाप्ति पर 'ओ३मू नमः शिवाय' तथा 'हे शिव ! ...आनय आनय' कहें। ध्यान रहे कि सूत्र-पाठ १४ बार होना चाहिए। हर बार अन्तिम वाक्य भी जोड़ें और हाँडी को बराबर हिलाते रहें। यह साधना इक्कीस दिन तक लगातार, निर्विघ्न की जाय तो इसके प्रभाव से वांछित व्यक्ति आकर्षित होकर चला आता है।

कामनासिद्धि-हेतु

बेल के १४ पत्र लाकर प्रत्येक पर एक-एक सूत्र लिखें। ऐसे सूत्रांकित



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.

८	१५	२	७
६	३३ओं	११ह्रीं	११
१४	६हं	८सः	१
४	५	१०	१३

मम विवाहो भवतु (.....)

(अर्थात् १० माला प्रतिदिन) आगे दिये गये मन्त्र का जाप करना चाहिए। इस पूजा का स्थान शुद्ध-एकान्त हो तथा पूजा के समय यन्त्र सामने रख लिया जाय। इस प्रकार लगभग ४५-४८ दिनों तक साधना करने पर अनुकूल परिणाम प्राप्त होता है। चित्र के नीचे दर्शाये गये रिक्त स्थान में कन्या अथवा बालक का नाम तथा उसकी राशि लिखें।

यन्त्र को सामने स्थापित करके, प्रतिदिन जप किया जाने वाला मन्त्र इस प्रकार है—

‘ओम् ह्रीं हंसः’

यदि बालक अथवा बालिका स्वयं यह साधना नहीं कर सकते तथा उनके लिए कोई दूसरा व्यक्ति करना चाहता है तो यन्त्र के नीचे सम्बन्धित बालक या बालिका का नाम लिख दें।

सर्वकार्य साधक यन्त्र

यह एक-सौ बत्तीसा यन्त्र समस्त कार्यों की पूर्ति में सहायक होता है।



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.

जब कभी यह यन्त्र लिखा जाय, तब सिद्ध करने के लिए नीचे लिखे दो मन्त्रों में से कोई एक जपना आवश्यक होता है—

(१) ओ३म् ह्रीं श्रीं ह्रः ।

(२) ओ३म् ह्रीं पञ्चदशि ममसिद्धि देहि देहि स्वाहा ओ३म् ह्रीं श्रीं क्लीं ।

८	९	६
३	५	७
४	६	२

पञ्चदशी यन्त्र के विविध प्रयोग

वशीकरण प्रयोग—सोमवार के दिन सफेद दूब, केसर, सफेद घुंघची और कपिला गाय का दूध, इन सबको एक में पीसकर स्याही बनानी चाहिए। तदुपरान्त अनार की कलम से भोजपत्र पर पञ्चदशी यन्त्र लिखकर घूप-दीप, मन्त्र-जप द्वारा यन्त्र की पूजा करके उसे कण्ठ में धारण करने से सामर्थ्यशाली राजा भी वशीभूत हो जाता है।

मोहन प्रयोग—बुधवार के दिन नागकेसर और गौरोचन की स्याही से अनार की कलम द्वारा सफेद सादे कागज पर यह यन्त्र लिखे, फिर उसे बत्ती की भाँति सरसों के तेल के दीपक में रखकर, 'क्लीं' बीज का स्मरण करते हुए, उस बत्ती को प्रातः, दोपहर और सन्ध्या के समय जलाना चाहिए। इसके प्रभाव से मोहन होता है।

कोई भी प्रयोग करना हो, उसकी सिद्धि के लिए, पूर्ववर्णित दो मन्त्रों में से एक का जप आवश्यक है।

आकर्षण प्रयोग—बृहस्पतिवार के दिन रात्रि में गौरोचन, तगर और घी मिलाकर उसकी स्याही से अनार की लेखनी द्वारा भोजपत्र पर पञ्चदशी यन्त्र लिखना चाहिए। फिर जिसका आकर्षण करना हो उसका नाम



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.

कृपा करने की शक्ति प्राप्त होती है।

“वाक्-सिद्धि के लिए इस यन्त्र की ४० हजार बार रचना और जप प्रभावी होता है। ६० हजार लिखकर जल में प्रवाहित करने पर उस जल के प्रवाह मार्ग के अन्तर्गत आने वाले समस्त क्षेत्र पर साधक का प्रभाव छा जाता है। ७० हजार की संख्या धन और बुद्धि प्रदान करती है तथा ८० हजार की संख्या कामना-पूर्ति करती है। यदि कोई साधक १ लाख यन्त्रों का निर्माण करे तो वह देव-तुल्य सामर्थ्यवान् हो जाता है।”

यन्त्र-लेखन का सरल विधान

पञ्चदशी यन्त्र की रचना एवं पूजा के सम्बन्ध में ग्रन्थों में कई विधान मिलते हैं। वे सभी बहुत जटिल और दुरूह हैं। आज के युग में कोई साधक उनके नियमानुसार यन्त्र-साधना नहीं कर सकता। अधिकांश पुस्तकों में कलेवर बढ़ाने के उद्देश्य से वे समस्त विधियाँ ज्यों-की-त्यों लिख दी जाती हैं; पर व्यावहारिकता की दृष्टि से वे नगण्य हैं। वह साधना-पद्धति किस काम की, जो प्रयुक्त न हो सके। अतः हम यहाँ एक सरलतम विधि प्रस्तुत कर रहे हैं। वैसे किसी भी शुभ मुहूर्त में देवता का ध्यान करते हुए, आस्था-पूर्वक यन्त्र-रचना की जाय, उसकी सामग्री पूर्ण और शुद्ध हो, तो साधना अवश्य ही फलवती होती है।

शारदीय पूर्णिमा के दिन, सन्ध्या (चन्द्रादय) से प्रातः चन्द्रास्त तक का समय पञ्चदशी यन्त्र-लेखन के लिए सर्वश्रेष्ठ माना गया है। लेखन के समय आवश्यक वस्तुओं की व्यवस्था अवश्य रहनी चाहिए; साथ ही जिस प्रयोजन से यन्त्र लिखना हो, तदनुकूल संकल्प, हवन, पूजन और जप आदि भी करना आवश्यक होता है।

पञ्चदशी यन्त्र के विविध लेखन-क्रम

किसी शुभ मुहूर्त में इस यन्त्र की भोजपत्र अथवा तामपत्र पर अष्टगन्ध की मसि से, अनार की कलम से रचना करे। तत्पश्चात् धूप-दीप से पूजा



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.

८	३	४
९	५	६
६	७	२

शूद्र वर्ण के लिए अशुभ ।

उपर्युक्त क्रम विवेचन के आधार पर साधक को अपने वर्ण के अनुसार ही यन्त्र का रचना-क्रम अपनाना चाहिए । इसके साथ ही चन्द्र लग्न और लेखन वस्तु के सम्बन्ध में इस बात की ओर सतर्क रहें कि वर्ण-क्रम से इनका भी विधान किया गया है । यथा —

ब्राह्मण वर्ण के लिए करणीय—ब्राह्मण वर्ण का साधक जब कभी पञ्चदशी यन्त्र की साधना करे, उसके लिए आवश्यक होगा कि वह यन्त्र-रचना में मिथुन या तुला या कुम्भ के चन्द्रमा के समय ही प्रवृत्त हो । स्याही में उसके लिए लाल चन्दन या हिंगुल अथवा अष्टगन्ध विशेष लाभप्रद

क्षत्रिय वर्ण के लिए—धनु या मेष राशि का समय और बरस, कपूर आमाश्रत काली स्याही का प्रयोग लाभकारी रहेगा ।

वैश्य वर्ण के लिए—वृषभ राशि का चन्द्र-समय, और अष्टगन्ध की मसि अनुकूल होती है ।

शूद्र वर्ण के लिए—वृषभ के चन्द्रमा का समय और अष्टगन्ध की मसि श्रेष्ठ कही गयी है ।

पञ्चदशी यन्त्र को आवश्यकतानुसार बीजमन्त्राकृति और षट्कोणाकृति में भी लिखा जाता है । उनके रूप इस प्रकार होंगे—



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.

नाभिस्थापक यन्त्र

किसी प्रकार का धक्का या तनाव खाकर कभी-कभी व्यक्ति का नाभि-केन्द्र असन्तुलित हो जाता है। फलतः उदर-पीड़ा जैसे उपद्रव आरम्भ होने लगते हैं और रोगी पीड़ा से व्याकुल हो उठता है। ऐसी स्थिति में यह यन्त्र कागज या भोजपत्र पर लिखकर धूप-दीप से पवित्र करके रोगी के कटिप्रदेश में बाँध देने से कष्ट दूर हो जाता है। ध्यान रहे कि इस यन्त्र की कोष्ठपूर्ति करते समय सर्वप्रथम ११५ की संख्या लिखनी चाहिए। इसी प्रकार सबसे अन्त में १२४ वाला कोष्ठक भरा जाय।

यन्त्र बहुत शुद्ध, एकान्त-पवित्र स्थान में लिखा जाना चाहिए। यन्त्र लिखते समय सामने बेरजा की या फिर कोई भी श्रेष्ठ घूप सुलगा लेनी चाहिए।

११५	१५५	१५६	१३२	१५४	१५३	१२७
१३८	११६	१५१	१३१	१५२	१२६	१३७
१३३	१३४	११७	१३०	१२५	१३५	१५६
१३६	१४०	१२४	११८	१४१	१४३	१४३
१४४	१२३	१४५	१२९	११९	१४६	१४५
१२२	१४८	१४९	१२६	१५०	१२०	१२१

विशेष ध्यान रखने की बात यह है कि यन्त्र की रचना में अन्तिम रेखा (नीचे की लाइन) खींचना वर्जित है। अर्थात् निचली पंक्ति के सभी कोष्ठक



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.

उदरपीड़ा नाशक यन्त्र

३	५	१	६	५	५	६	३
७	४	५	४	३	६	६	६
५	१	१	३	१	१	७	७
३	४	१	२	२	२	८	८
८	६	६	७	१३	११	३४	१७
१०	१०	७	३	१६	२०	७०	११
५५	५५	४	८	८	५०	१३	११
७७	७७	६	४	७	५०	६५	४०

किसी भी कारण से यदि उदर-पीड़ा ने व्याकुल कर रखा है तो यह यन्त्र काँसे की थाली में अष्टगन्ध से लिखकर उसे घूप-दीप दें; फिर उसपर पानी डालें और यन्त्र को घोकर वही घोवन(चरणामृत) रोगी को पिलाने से उदरशूल मिट जायगा।

अर्शनाशक यन्त्र

अर्श (बवासीर) रोग के निवारण-हेतु भोजपत्र पर अष्टगन्ध से अग्र-लिखित यन्त्र लिखकर घूप देने के पश्चात् ताँबे के ताबीज में रखकर गले में

७	२७	५३	तइ
	७०		
तज	१७	१२	ट६
७	७१	त२	त१
	१		
मत	१त	०	११



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.

कर दिया है, तो उसे चाहिए कि वह इस चौतीसा यन्त्र की साधना करे। रवि-पुष्य के दिन अथवा गुरु-पुष्य के दिन भोजपत्र पर केसर की स्याही और अनार की कलम से लिखकर इस यन्त्र की धूप-दीप से पूजा करे, तत्पश्चात् घर या दूकान में स्थापित कर दे। यह शरीर पर भी धारण किया जा सकता है। इसके प्रभाव से शारीरिक तथा आर्थिक क्षीणता समाप्त होकर कांति और लक्ष्मी की वृद्धि होती है।

ज्वर निवारक यन्त्र

५६	७	४२
२१	३५	४६
२८	६३	१४

यह यन्त्र अद्भुत और दुर्लभ है। इसके कोष्ठकों का योग १०५ होता है। इसकी रचना बहुत सरल है किन्तु प्रभाव बहुत प्रबल है। इसको भोजपत्र या कागज पर लिखकर घागे से हाथ या पैर में बाँध देना चाहिए। बाँधने से पूर्व इसे भी धूप देना आवश्यक रहता है। रोगी के सिर पर अथवा पीड़ा वाले स्थान पर इसको पहले २१ बार फिरा लेना चाहिए (जैसे न्यौछावर की जाती है)। इसे बाँधने से ज्वर, ताप, पीड़ा, ऐंठन सब शान्त हो जाते हैं। जब कष्ट दूर हो जाय तब इसको रोगी के शरीर से खोलकर किसी एकान्त कुआँ में, (जिसमें जल हो) डाल देना चाहिए।





You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.

साधना की जाय, यह परमावश्यक है।

अस्सीया यन्त्र

इस अस्सीया यन्त्र का विशेष प्रभाव सर्पभय निवारक होता है। जहाँ साँप होने की शंका हो, वहाँ इस यन्त्र को आस-पास की दीवारों में सिन्दूर से लिखना चाहिए। काँसे की थाली में यह यन्त्र लिखकर थाली बजाने से

३२	३६	२	७
६	३	३६	३५
३८	३३	८	९
४	५	३४	३७

साँप भाग जाता है। वैसे किसी भी शुभ मुहूर्त में इस यन्त्र को दीवारों पर लिख देने से सुरक्षा रहती है। यदि इस यन्त्र के प्रभाव से साँप घर से बाहर जाता (या घर में ही) दीख पड़े, तो उसे मारना नहीं चाहिए।

भूतबाधानाशक यन्त्र

जहाँ कहीं भी भूत-प्रेत के अस्तित्व की शंका हो, वहाँ यह यन्त्र यक्ष-कर्दम स्याही से दीवार पर लिख देना चाहिए। वहाँ घूप-दीप देकर हनुमानजी का चित्र स्थापित कर देने से प्रेतबाधा नष्ट हो जाती है। गन्दगी, एकान्त, बदबू, अपवित्र वस्तुयें, शव, हड्डी, नाखून, बाल, रक्त, माँस तथा वीभत्स दृश्य प्रेतों को आकर्षित करते हैं, अतः इनसे स्थान को स्वच्छ रखकर वहाँ घूप-दीप नित्य देना चाहिए।

सुख-शान्तिदायक यन्त्र

यक्षकर्दम की स्याही बनाकर उससे मकान के भीतर और मुख्य द्वार



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.

४५	३६	५०	३९
४२	४७	३७	४४
३५	४६	४०	४९
४८	४९	४३	३८

कर घूप-दीप द्वारा शुद्ध करके पहनना चाहिए। यह एक सौ सत्तरिया यन्त्र कहा जाता है।

व्यापार-वृद्धिकारक यन्त्र

इस यन्त्र की रचना दीवाली को आधी रात के समय की जाती है। इसको सिन्दूर या हिंगुल से दीवार पर (दुकान के बाहर) लिखना चाहिए। वैसे, यह भोजपत्र पर भी लिखा जाता है। उस स्थिति में पञ्चगन्ध से लिखना चाहिए। कलम के लिए चमेली की टहनी उत्तम होती है। यदि दीवाली की रात दूर है, तो किसी भी अभावस्था को यह यन्त्र लिखा जा सकता है। जिस व्यक्ति के लिए (चाहे स्वयं के लिए) इसकी रचना की

९२	९९	२	७
६	३	९६	९५
९८	९३	८	९
४	५	९४	९७

जाय, उसे नित्य घूप-दीप द्वारा इस यन्त्र की पूजा करते रहना चाहिए। स्त्रियों को इससे गर्भ-रक्षा और सन्तान-प्राप्ति होती है।



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.

पड़ोसी भी परेशान हो जाते हैं, और स्वयं वे दम्पति तो नरक की जैसी दुःखद स्थिति में पड़े रहते हैं। ऐसे विघटित दाम्पत्य को प्रेमपूर्ण बनाने के लिए यह यन्त्र बड़ा काम करता है। ऐसे उद्देश्य के लिए इसकी रचना भोजपत्र पर कुंकुम से करनी चाहिए। इसे धारण करने वाला पुरुष पत्नी की दृष्टि में प्रेम, सम्मान और विश्वास का पात्र हो जाता है।

(द) उपर्युक्त परिस्थितियों में यदि कोई स्त्री इस यन्त्र को हल्दी से लिखकर पूजनोपरान्त धारण करे तो पति उसके अनुकूल हो जाता है।

ध्यान रहे कि यह यन्त्र दीवाली की मध्य रात्रि में लिखा जाय तो विशेष प्रभावी रहता है। किन्तु यदि बीच में ही आवश्यकता पड़ रही हो तो किसी भी शुभ मुहूर्त में रचना करके धारण किया जा सकता है।

दाम्पत्य समस्या के निवारणार्थ लिखे जाने वाले यन्त्र की स्याही का उल्लेख कर दिया गया है। उसके अतिरिक्त यदि कोई अन्य कार्य है—धन-प्राप्ति या भौतिक सम्पत्ति की कामना, तो ऐसी आवश्यकता की पूर्ति हेतु यन्त्र की रचना पञ्चगन्ध स्याही (केसर, कस्तूरी, कपूर, चन्दन और मिश्री) से करनी चाहिए।

लाखिया यन्त्र (२)

लाखिया यन्त्र का एक रूप और मिलता है। इसे भी दीवाली की रात (मध्य रात्रि) में लिखना चाहिए। यह यन्त्र भी भोजपत्र अथवा चाँदी के पत्र पर बनाना चाहिए। इसकी रचना में अष्टगन्ध की स्याही प्रयुक्त होती है और कलम अनार की।

४२०००	४६०००	३०००	७०००
६०००	३०००	४६०००	४५०००
४२०००	४३०००	८०००	१०००
४०००	५०००	४५०००	४३०००

यन्त्र लिखने के बाद एक पहर तक उसका ध्यान करे; फिर किसी बाग, वन, जलाशय जैसे एकान्त-गम्भीर स्थान में जाकर वहाँ भी यन्त्र-सिद्धि के लिए एक पहर तक इष्टदेव का मन्त्र

जपे। यन्त्र की रचना से लेकर अन्तिम जप तक यन्त्र के पास (साधक के सामने) लोबान की धूप बराबर जलती रहनी चाहिए। विधिपूर्वक रचना



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.

लेखनी द्वारा यह यन्त्र लिखा जाता है। लिखने का समय कोई रवि-पुष्य का योग हो तो सर्वश्रेष्ठ होता है। अन्यथा किसी भी रविवार को शुभ मुहूर्त में इसका लेखन प्रारम्भ किया जा सकता है।

यन्त्र-रचना हो चुकने पर उसे बाजोट पर स्थापित करके धूप-दीप आदि से पूजा की जानी चाहिए। यथासम्भव यन्त्र को कुछ दक्षिणा-भेंट भी अर्पित करनी चाहिए। पूजनोपरान्त निम्नांकित मन्त्र की एक माला (१०८ दाने) जपकर पञ्चागृत मिश्रित वस्तुओं से हवन करने का विधान है। मन्त्र है—

‘ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं नमः विजय यन्त्रराज धारकस्य ऋद्धि, वृद्धि, जयं सुखं साभाग्यं लक्ष्मीसिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा ।’

यन्त्र-मर्मज्ञों का कथन है कि इस विजयराज यन्त्र के नवों विभागों का पृथक्-पृथक् प्रभाव इस प्रकार अनुभूत होता है —

(१) प्रथम विभाग की शक्ति वायु-दोष तथा भौतिक बाधा (भूत-प्रेत-पिशाच, डाकिनी-शाकिनी आदि) को दूर करती है।

(२) यन्त्र के दूसरे विभाग का प्रभाव साधक के प्रति सम्बन्धित अधिकारी वर्ग को सन्तुष्ट रखता है।

(३) यन्त्र के तीसरे विभाग की शक्ति अग्नि और सर्प का भय दूर करती है।

(४) यन्त्र का चतुर्थ विभाग तापनाशक है। इसके प्रभाव से सभी प्रकार के ज्वर, ताप नष्ट हो जाते हैं।

(५) पाँचवें विभाग का प्रभाव ग्रह-पीड़ा का शमन करता है। नव-ग्रहों में से कोई-न-कोई सदैव ही व्यक्ति को पीड़ित करता रहता है। यन्त्र का पञ्चम विभाग इस बाधा को दूर कर देता है।

(६) छठा विभाग साधक को तथा स्वयं यन्त्र को भी विजय-सिद्धि प्रदान करता है।

(७) सातवाँ विभाग मन्दिर की ध्वजा आदि पर लिखे गये यन्त्र को प्रभावशाली बनाता है।

(८) आठवाँ विभाग उन शस्त्रों को शक्ति प्रदान करता है, जिनपर यह यन्त्र बँधा होता है।

(९) नवें विभाग का प्रभाव दीवाली के दिन दूकान या घर की दीवार



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.

नवम रश्मि

विविध देवताओं के यन्त्र

भारतीय संस्कृति में अध्यात्म का स्थान सर्वोच्च है। अध्यात्म के अन्तर्गत विविध देवी-देवताओं के विषय में विपुल साहित्य उपलब्ध होता है। देवताओं में श्रीगणेशजी को महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। वे विघ्न-विनाशक, गणपति और आदिदेव हैं। यही कारण है कि कोई भी मंगल कार्य किया जाय, उसकी निर्विघ्न पूर्णता के लिए सर्वप्रथम गणेशजी की पूजा की जाती है। यन्त्र शास्त्र में भी गणेशजी का यह मान-सम्मान अक्षुण्ण है। उनके विषय में स्वतन्त्र रूप से यन्त्र-रचना करके उसके पूजन-विधान और परिणाम की विस्तारपूर्वक व्याख्या की गयी है। इस अध्याय में यद्यपि अनेक देवताओं के यन्त्र लिखे जा रहे हैं; पर चूंकि गणेशजी आदिदेव तथा विघ्न-विनाशक हैं, अतः सर्वप्रथम उन्हीं के यन्त्र 'श्री गणेश यन्त्र' के विषय में लिखा जा रहा है।

श्री गणेश यन्त्र

भगवान् गणपति की पूजा के तीन माध्यम हैं—मूर्ति, चित्र और यन्त्र। स्वस्तिक चिह्न वस्तुतः गणेशजी का प्रतीक है अर्थात् उनका प्रतिरूप है। 'गं' बीजाक्षर है। यह समूचे स्वस्तिक चिह्न का संक्षिप्त रूप है। इस प्रकार गणेशजी की मूर्ति अथवा चित्र अथवा स्वस्तिक अथवा 'गं' बीज, किसी की भी पूजा की जाय, वह गणेशजी की ही पूजा होगी और पूर्ण फल प्राप्त होगा। यह सूक्ष्मता का क्रमिक रूपांकन है। भगवान् गणेशजी की विशाल-काय प्रतिमा उपलब्ध न हो तो विकल्प के रूप में उक्त कोई भी एक माध्यम लिया जा सकता है—चित्र, स्वस्तिक अथवा 'गं' बीज।



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.

विश्वकाशावकाशो ग्रहमणसहितो भाति यशयोदयाद्री ।
सर्वानन्दप्रदाता हरिहरनमसः पातु मा विश्वचक्षुः ॥

कवच

ध्यानोपरान्त सूर्य कवच का पाठ आवश्यक रहता है। बिना कवच-पाठ किये साधक सुरक्षित और निर्विघ्न नहीं रह पाता, अतः कवच का पाठ अवश्य ही करना चाहिए।

प्रणवो मे शिरः पातु घृणिर्मम पातु भालकम् ।
सूर्योव्यन्नयन द्वन्द्वमादित्यः कर्णयुग्मकम् ॥
अष्टाक्षरो महामन्त्रः सर्वाभीष्ट फलप्रदः ।
ह्रीं बीजं मे मुखं पातु हृदयं भुवनेश्वरी ॥
चन्द्रबीजं बिसर्गादियं सर्वतन्त्रेषु गोपितम् ।
अक्षरोऽसा महामन्त्रः सर्वतन्त्रेषु गोपितः ॥
शिवो बह्लिसमायुक्तो वामाक्षि बिन्दु भूषितः ।
एकाक्षरो महामन्त्रः श्रीं सूर्यस्य प्रकीर्तितः ॥
गुह्याद् गुह्यातरो मन्त्रो वांछाचिन्तामणिः स्मृतः ।
शीर्षादि पादपद्व्यन्तं सदा पातु मनूत्तमः ।

मन्त्र

अन्त में मन्त्र-जप करना चाहिए। नीचे दो मन्त्र लिखे जा रहे हैं, कोई भी एक लिया जा सकता है—

- ओम् घृणिः सूर्य आदित्यः ।
- ओम् ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः ।

मंगल यन्त्र

मंगल ग्रह अोज, तेज, पराक्रम का स्वामी तथा रक्तचाप जैसे रोगों का नाशक है। व्यावहारिक जगत् में, ऋणभार से मुक्ति पाने के लिए लोग इसकी साधना करते हैं। अनुभव में आया है कि मंगल यन्त्र की पूजा तथा जप-अनुष्ठान करने से ऋणभार उतर जाता है। अस्तु, मंगल यन्त्र की रचना तथा पूजा का विधान अग्रवत है—



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.

श्री कार्तवीर्यार्जुन द्वादश नामावि स्तोत्र

ओम् कार्तवीर्यः खलद्वेषो कृतवीर्यसुतो बली ।
 सहस्रबाहुः शत्रुघ्नो रक्तबासा घनुर्धरः ॥
 रक्तगन्धो रक्तमाल्यो, राजा स्मर्तुरभीष्टदः ।
 द्वादशानि नामानि कार्तवीर्यस्य यः पठेत् ॥
 सम्पदस्तस्य जायन्ते, जना सर्वे यशं गताः ।
 राजानो दासतां यान्ति रिपवो वश्यतां गताः ॥
 आनयत्याशु वूरस्थं क्षेम लाभयुतं प्रियम् ।
 सर्वं सिद्धि करं स्तोत्रं जप्तृणां सर्वकामदम् ॥
 कार्तवीर्यं महावीर्यं सर्वशत्रुविनाशन ।
 सर्वत्र सर्वदा तिष्ठ दुष्टान नाशय पाहिमाम् ॥
 उत्तिष्ठ दुष्ट दमन सप्तद्वीपैक पालकम् ।
 त्वामेव शरणं प्राप्तं सर्वतो रक्ष-रक्ष माम् ॥
 दुष्टघ्न किं त्वं स्वपिषि किं तिष्ठसि किं चिरायसि ।
 पाहि नः सर्वदा सर्वभयेभ्यः स्व सुतानिव ॥
 मतिभंग स्वरो हीनः शत्रूणां मुखभंजनम् ।
 रिपूणां च सदैवास्तु सभायां मे जयं कुरु ॥
 यस्य स्मरण मात्रेण सर्वं दुःख क्षयो भवति ।
 तं नमामि महावीरमर्जुनं कृतवीर्यजम् ॥
 हैहयाधिपतये स्तोत्रं सहस्रावृत्तिकं कृतम् ।
 वाञ्छितार्थप्रदं नृणां शूद्राद्यैर्न श्रुतं यदि ॥

स्तोत्र-पाठ समाप्त होने पर यन्त्र को प्रणाम करते हुए क्षमायाचना करनी चाहिए । २१ या ४१ दिनों तक ऐसी साधना करने से अवश्य ही लाभ होता है ।

काली यन्त्र

आदिशक्ति काली की उपासना से भक्त के समस्त संकट टल जाते हैं । काली पराक्रम की देवी हैं । दुष्टदलन और विपत्ति-निवारण के लिए देवता तक उनकी शरण लेते हैं । प्रस्तुत काली यन्त्र के विधानानुसार उनकी पूजा-



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



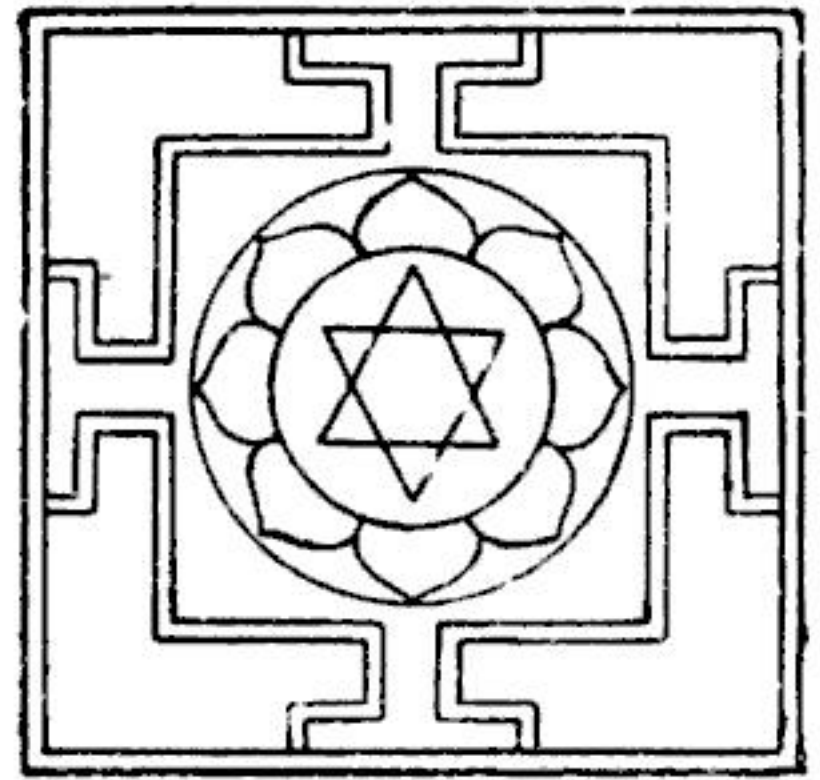
You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.

चित्र के अनुसार तारायन्त्र की रचना करके उसका विधिपूर्वक पूजन करने से कामनापूर्ति होती है ।

सर्वप्रथम किसी शुभ मुहूर्त में भोजपत्र अथवा ताम्रपत्र पर यन्त्र की रचना करनी चाहिए । यन्त्र-लेखन में अष्टगन्ध अथवा यक्षकर्दम की मसि और अनार की लेखनी का प्रयोग श्रेष्ठ रहता है । यन्त्र निर्मित



हो चुकने पर उसे शुद्ध-एकान्त स्थान में स्थापित करें । प्राण-प्रतिष्ठा करके (यदि इसमें स्वयं को असुविधा हो तो किसी योग्य पुरोहित-पुजारी का सह-योग लिया जा सकता है) उसकी विधिवत् पूजा और तदुपरान्त मन्त्र-जप करना चाहिए । स्मरण रहे कि यन्त्र के मध्य भाग में तारादेवी का बीज-मन्त्र लिखना आवश्यक है । मन्त्र-जप के प्रारम्भ में, अन्य यन्त्रों की भाँति न्यास आदि अवश्य कर लेना चाहिए ।

तारा यन्त्र की उपासना-पद्धति इस प्रकार है—

विनियोग

अस्य श्री महोप्रतारा मन्त्रस्य अक्षोभ्यऋषिः वृहती छन्दः श्री महोप्र-
तारा देवता हूं बीजं फट् शक्तिः ह्रीं कीलकम् ममाभीष्ट सिद्धर्थे जपे
विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यास

अक्षोभ्यऋषये नमः । (शिरसि)
वृहतीछन्दसे नमः । (मुखे)
महोप्रतारायै नमः । (हृदये)
हूं बीजाय नमः । (गुह्ये)
फट् शक्तये नमः । (पादयोः)
ह्रीं कीलकाय नमः । (नाभौ)
विनियोगाय नमः । (सर्वांगे)



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.

ह्रं क्षेमा त्वरिता पातु स ह्रीं सकली मनोभवा
 हंसः पायान्महादेवी परं निष्फल देवता ।
 विजया मंगला दूती कल्याणो भगमालिनी
 ज्वाला च मालिनी नित्या सर्वदा पातु मा शिवा ।

ध्यान

बालार्कयुत तेजसं त्रिनयनां रयताम्बरोल्लासिनीं,
 नानालंकृतिराजमानवपुषं बालेन्दुकशेखरम् ।
 हस्तैरिक्षुधनुः सृणिं सुमशरं पाशं मुदा विभ्रतीं ।
 श्री चक्रस्थित सुन्दरीं त्रिजगतामाधारभूतां भजे ॥

कवच

ओम् पूर्वे मा भैरवी पातु बाला मा पातु दक्षिणे ।
 मालिनी पश्चिमे पातु वासिनी उत्तरेवतु ॥
 ऊर्ध्वं पातु महादेवी महात्रिपुर सुन्दरी ।
 अधस्तात् पातु देवेशी पातालतलवासिनी ॥
 आधारे वाग्भवः पातु कामराजस्तथा हृदि ।
 डामरः पातु मां नित्यां मस्तके सर्व कामदः ॥
 ब्रह्मरन्ध्रे सर्वगात्रे छिद्रस्थाने च सर्वदा ।
 महाविद्या भगवती पातु मा परमेश्वरी ॥
 ऐं ह्रीं ललाटे मा पातु क्लीं क्लूं सश्च नेत्रयोः ।
 नासायां मे कर्णयोश्च द्रों व्रं व्रां चिबुके तथा ॥
 सौः पातु गले हृदये सह ह्रीं नाभिदेशके ।
 कल ह्रीं क्लीं स्त्रीं गुह्यदेशे स ह्रीं पादयोस्तथा ॥
 स ह्रीं मा सर्वतः पातु सकली पातु सन्धिषु ।
 जले स्थले तथाऽकाशे दिक्षु राजगृहे तथा ।

जप-मन्त्र

महात्रिपुर सुन्दरी देवी के अन्य अनेक नाम हैं; जैसे श्री विद्या, पञ्चदशी, त्रिपुरा सुन्दरी, पोड्सी आदि । इनमें से चाहे जिस नाम की आराधना



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.

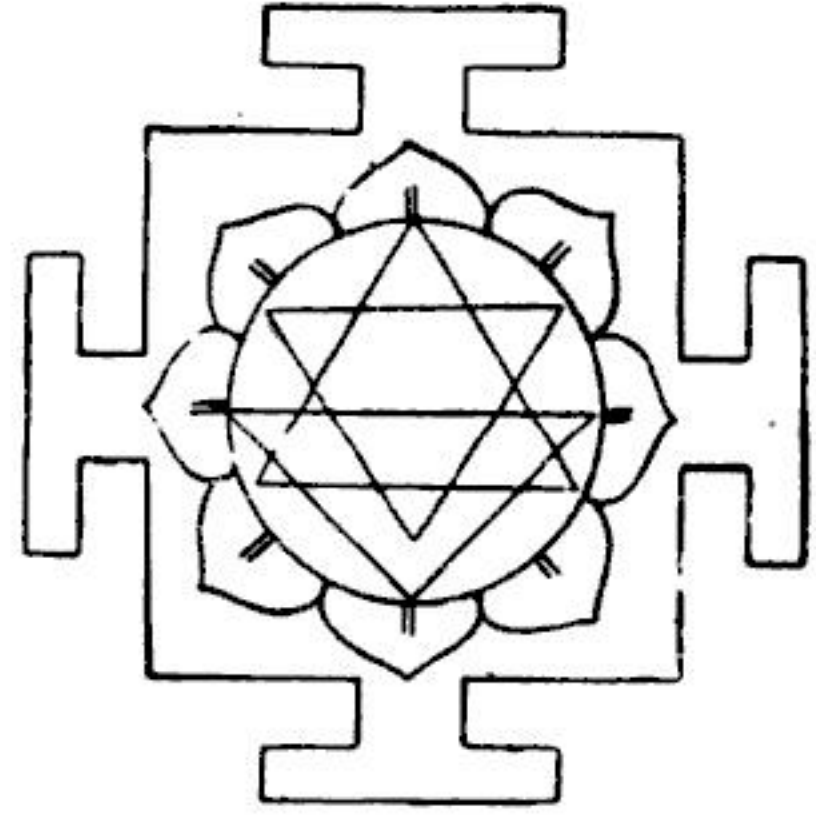


You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.

भोजपत्र पर, शुभ मुहूर्त में यन्त्र-रचना करके उसकी प्राण-प्रतिष्ठा की जाती है। तदुपरान्त न्यास आदि करके नियमित रूप से मन्त्र जपना चाहिए। देवी का यह यन्त्र भी बहुत प्रभावशाली होता है। सैकड़ों भक्त प्रतिदिन इसकी पूजा करते हैं।



स्मरण रहे कि कोई भी पूजा आस्था, शुचिता और विधि-विधान के अभाव में पूर्ण नहीं होती। और अपूर्ण साधना से शुभ परिणाम की आशा करना बहुत बड़ी भूल है। अतः साधक के लिए अनिवार्य है कि यदि वह यन्त्र-साधना करना चाहता है तो नियमपालन के प्रति सदैव जागरूक रहे।

विनियोग

ओम् अस्य श्री त्रिपुरभैरवी मन्त्रस्य दक्षिणामूर्ति ऋषिः पंक्तिच्छन्दः त्रिपुरभैरवी देवता वाग्भवो बीजम् शक्ति बीजं शक्तिः कामराज कीलकं श्री त्रिपुरभैरवी प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यास

- दक्षिणामूर्तये ऋषये नमः । (शिरसि)
- पंक्तिच्छन्दसे नमः । (मुखे)
- श्री त्रिपुरभैरवी देवतायै नमः । (हृदये)
- वाग्भवबीजाय नमः । (गुह्ये)
- शक्तिबीज शक्तये नमः । (पादयो)
- कामराज कीलकाय नमः । (नाभौ)
- विनियोगाय नमः । (सर्वांगे)



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.

ध्यान

अनोपे स्वशरीरस्य नाभिनीरजसंगताम् ।
 निर्लेपां निर्गुणां सूक्ष्मां बालचन्द्र समप्रभाम् ।
 समाधि मात्र गम्या तु गुणत्रितम वेष्टिताम् ।
 कलातीतां गुणातीत मुक्तिमात्र प्रदायिनीम् ।
 छिन्नमस्तां भजे देवीं, सर्व-सौख्य प्रदायिनीम् ॥

कवचपाठ

ह्रं बीजात्मिका देवी मुण्डकर्त्रिधरा परा ।
 हृदयं पातु सा देवी वर्णिनी डाकिनीयुता ॥
 श्रीं ह्रीं ह्रं ऐं चैव देवी पूर्वस्यां पातु सर्वदा ॥
 सर्वांग मे पातु सदा पातु छिन्नमस्ता महाबला ॥
 वज्र वैरोचनीये ह्रं फट बीज समन्विता ।
 उत्तरस्यां तथाग्नां च वारुणे नैऋतेऽवतु ॥
 इन्द्राक्षी भैरवी चैव सितांगी च संहारिणी ।
 सर्वदा पातु मा देवी चान्यान्यासु हि दिक्षुव ॥

जप-मन्त्र

‘श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं वज्र वैरोचनीये ह्रं ह्रं फट् स्वाहा ।’

इस मन्त्र को एक लाख बार जपना चाहिए । एक लाख जप से इसका पुरश्चरण सम्पन्न होता है । जप के पश्चात् दशांश हवन करना चाहिए । हवन में लाल रंग के पुष्प तथा घृत प्रयोजनीय होते हैं । जपसंख्या की पूर्ति के लिए प्रतिदिन एक निश्चित संख्या में मन्त्र जपना चाहिए । दैनिक जप तथा पूजा हेतु खीर, सूखा मेवा का नैवेद्य श्रेष्ठ रहता है । प्रतिदिन यन्त्र की पूजा के पश्चात् न्यास, ध्यान, जप करके नैवेद्य सामग्री का भोग लगाना चाहिए । भोग लगाते समय अग्रलिखित मन्त्र पढ़ने का विधान है । भोग लगाने के पश्चात् वह नैवेद्य प्रसाद रूप में स्वयं लेना तथा दूसरों को वितरित करना चाहिए । भोग लगाने का मन्त्र इस प्रकार है—



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



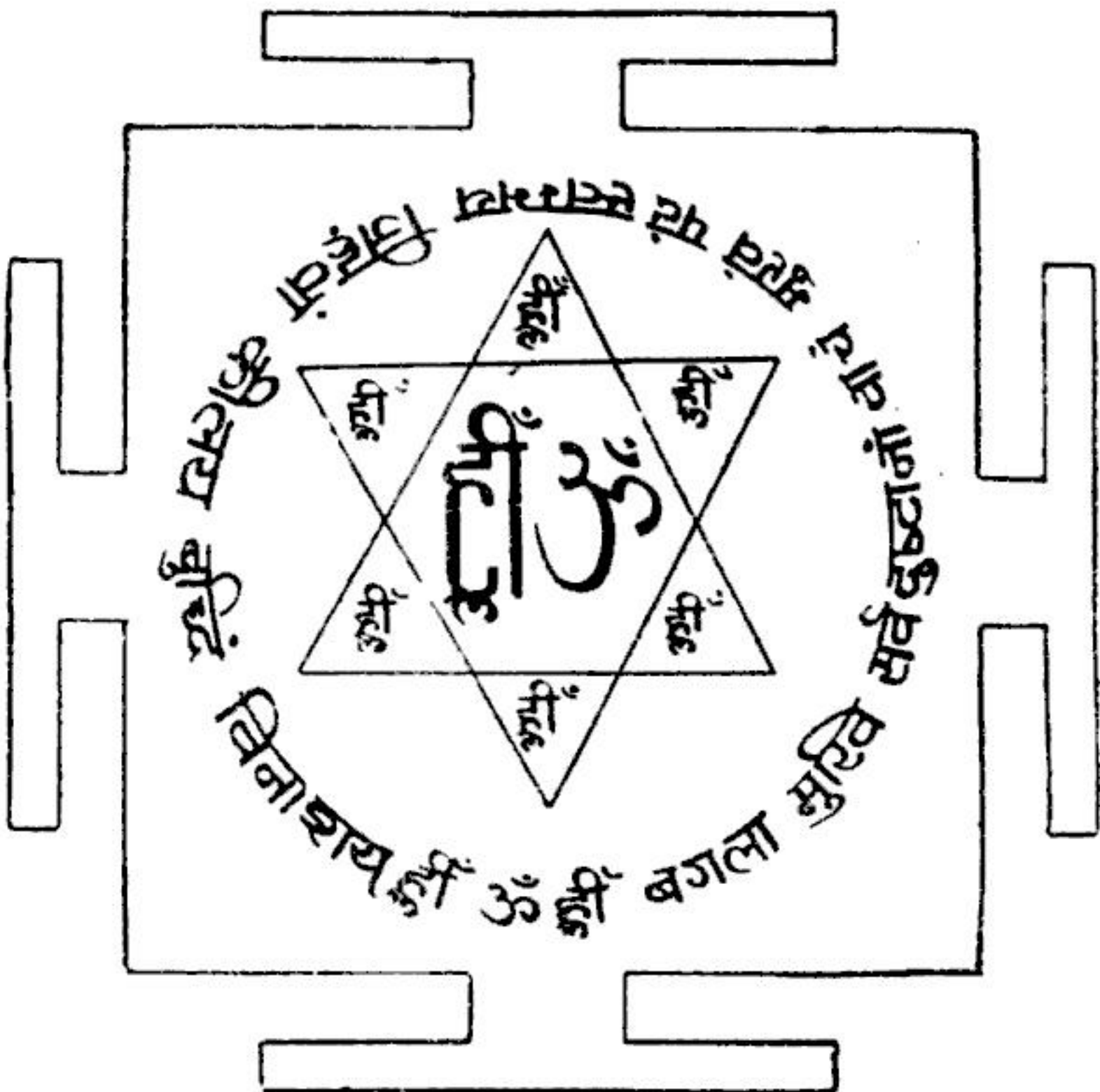
You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.

ध्यान

मध्ये सुधाब्धि मणि मंडित रत्नवेद्यां,
 सिंहासनो परिगतां परिपीत वर्णाम् ।
 पीताम्बराभरण माल्य विभूषितांगी
 देवीं नमामि धृत मुद्गर बैरि जिह्वाम् ॥
 जिह्वाप्रमादाय करेण देवी
 वामेन शत्रून् परिपीडयन्तीम् ॥
 गदाभिघातेन च दक्षिणेन,
 पीताम्बराढ्यां द्विगुणां नमामि ॥

बगलामुखी यन्त्र (द्वितीय)

बगलामुखी देवी की उपासना तथा यन्त्रानुष्ठान के सम्बन्ध में एक अन्य यन्त्र का भी उल्लेख प्राप्त होता है । यहाँ उस दूसरे यन्त्र का चित्र





You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.

विजयापातु भवने जयापातु सदा मम ॥
 सर्वांगे पातु कामेशी महादेवी सरस्वती ।
 तुष्टिः पातु महामाया उत्कृष्टिः सर्वदाऽवतु ॥
 ऋद्धि पातु महादेवी सर्वत्रशंभुवल्लभा ।
 वाग्भवी सर्वदा पातु पातु मा हरगेहिनी ॥
 रमा पातु सदादेवी पातु माया स्वराट् स्वयम् ।
 सर्वांगे पातु मा लक्ष्मीविष्णु माया सुरेश्वरी ॥
 शिवदूती सदापातु सुन्दरी पातु सर्वदा ।
 भैरवी पातु सर्वत्र भेरुण्डा सर्वदाऽवतु ॥
 त्वरिता पातु मा नित्यमुपतारा सदाऽवतु ।
 पातु मां कालिका नित्यं कालरात्रि सदाऽवतु ॥
 नवदुर्गा सदा पातु कामाक्षी सर्वदाऽवतु ।
 योगिन्यः सर्वदा पातु मुद्राः पातु सदा मम ॥
 मात्रा पातु सदा देव्यश्चक्रस्था योगिनी गणाः ।
 सर्वत्र सर्व कामेषु सर्वकर्मसु सर्वदा ।
 पातु मा देवदेवी च लक्ष्मीः सर्वसमृद्धिदा ॥

जप-मन्त्र

देवी महालक्ष्मी के वैसे तो अनेक नाम-सम्बोधन हैं, जिनके माध्यम से उन्हें स्मरण किया जा सकता है। किन्तु जहाँ तक महालक्ष्मी यन्त्र के जप की बात है, इसके लिए मुख्य रूप से दो मन्त्र बताये गये हैं। दोनों ही मन्त्र बहुत सरल और सुसाध्य हैं। आस्थापूर्वक इनका जप करके यन्त्र का पुरश्चरण किया जाता है। पुरश्चरण से मन्त्र सिद्ध हो जाता है और तब उसमें यह प्रभाव उत्पन्न हो जाता है कि साधक जब भी किसी कामना के लिए उक्त मन्त्र का जप करे, कामना की पूर्ति हो जाती है। मन्त्र इस प्रकार हैं —

(१) ओम् ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रसौ जगत्प्रसूत्यै नमः ।

(२) 'श्री ।'

मन्त्र की जपसंख्या निर्धारित करके प्रतिदिन उसे जपते हुए एक निश्चित अवधि में जप पूर्ण करके-हवन तर्पण आदि करने से यन्त्र अनुकूल फल देता है।





You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.

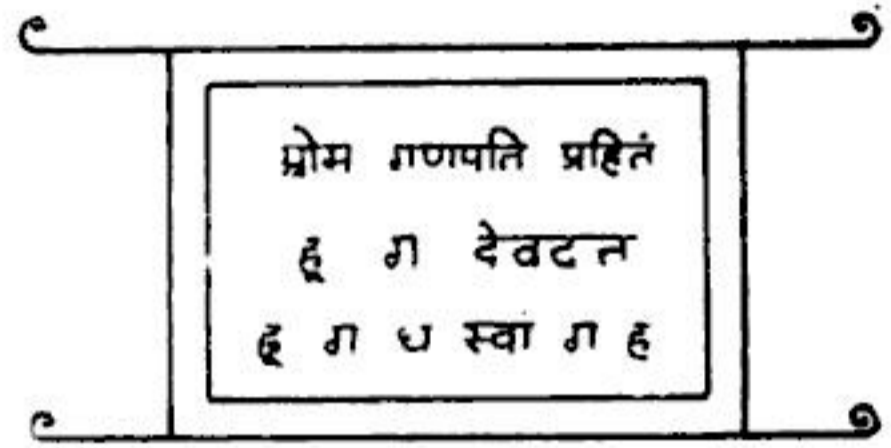


You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.

लोहे की कलम से किया जाता है। भोजपत्र पर यन्त्र की रचना करके साधक को चाहिए कि उसकी पूजा करे। पूजा में लाल चन्दन, रोली और लाल कुंकुम ही प्रयोज्य होता है।

पूजनोपरान्त रात में ही किसी बालक को भोजन कराना चाहिए।

उसके बाद यन्त्र को जूठन में मिलाकर किसी कुत्ते को खिला देना चाहिए। ध्यान रहे कि यन्त्र की रचना के बाद उसका पूजन करना है और पूजनोपरान्त



गणेशजी की वन्दना करनी है। गणेशवन्दना के बाद ही यन्त्र को जूठन में मिलाया जाता है। गणेशजी की वन्दना नीचे लिखी जा रही है—

गणेशवन्दना

नीलांजनाभो गजवक्रवर्यः
शत्रु गृहीत्वा निजपुष्करेण ।
उच्यालयन्त गगने गणेशः,
उच्चाटयेदत्त न संशयोस्ति ॥

चूँकि इस उच्चाटन यन्त्र के देवता गणेशजी हैं, अतः यन्त्र-निर्माण से लेकर अन्त तक पूरी प्रक्रिया में उन्हीं का ध्यान, स्तुति, जप करना चाहिए।

नोट—अभिचार यन्त्रों में जहाँ चित्र में देवदत्त नाम आया है वहाँ, सभी यन्त्रों में, शत्रु, विरोधी अथवा जिसके प्रति वह यन्त्र प्रयुक्त करना हो, उसका नाम लिखना चाहिए।

विशेष ज्ञातव्य—उच्चाटन की स्थिति में; इससे प्रभावित व्यक्ति का मानसिक सन्तुलन ठीक नहीं रह पाता। वह लगभग अर्धविक्षिप्त जैसा हो जाता है। उसका मन हर तरफ से उचटा रहता है। यहाँ तक कि इस अस्थिर मनोदशा में वह दुर्घटनाग्रस्त अथवा मृत भी हो जाता है। इसलिए उच्चाटन को भी अभिचार और पापकर्म (निन्दित) कहा जाता है। अकारण, मनोरंजन के लिए, द्वेषवश अथवा सामान्य विरोध के बदले, ऐसे क्रूर कार्य



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.

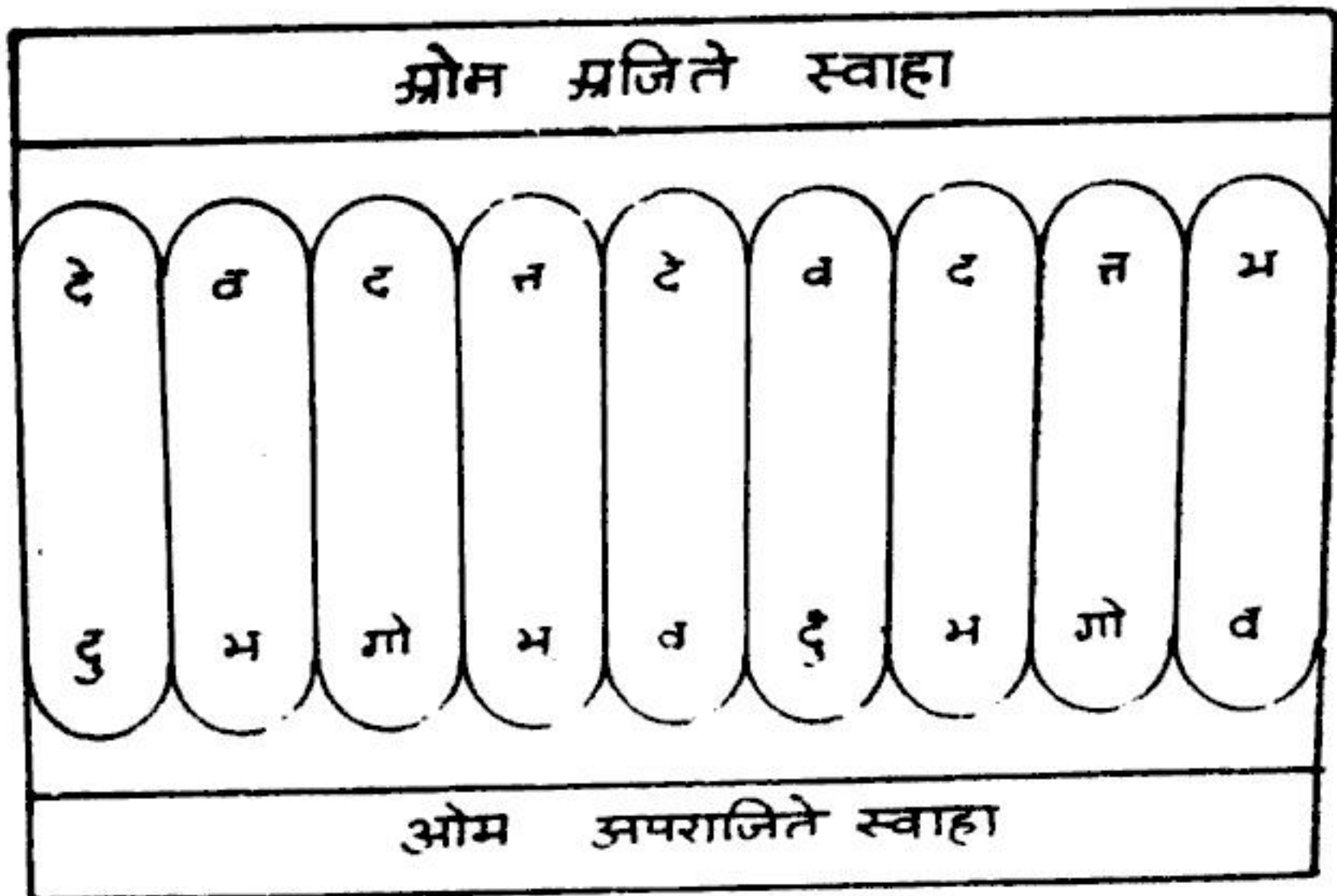


You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.

दुर्भाग्यवर्धन यन्त्र

अत्याचारी शासक, क्रूरकर्मा नागरिक अथवा प्राणघाती शत्रु यदि सम्पन्न होता है, तो और अधिक कष्ट देता है। ऐसी स्थिति में यदि वह किसी प्रकार शक्तिहीन किया जा सके तो रक्षा हो सकती है। यन्त्र शास्त्र में ऐसे लोगों को क्षीण करने के लिए दुर्भाग्यवर्धन यन्त्र की रचना की गयी है। यह यन्त्र अपने नामानुसार व्यक्ति को दुर्भाग्यग्रस्त करके, विपन्नता की स्थिति में पहुँचा देता है। अतः पीड़ित जनों द्वारा इस यन्त्र का प्रयोग रक्षा-कवच की भाँति किया जाता है। यद्यपि यह अभिचार कर्म है, इसकी गणना पातक कर्मों में होने से यह निन्दनीय है, किन्तु जब प्राणरक्षा का कोई अन्य मार्ग न हो तब अन्तिम उपाय के रूप में समर्थ व्यक्ति इस यन्त्र की शरण लेते हैं।

भोजपत्र पर गोरोचन और कुंकुम से यह यन्त्र बनाया जाता है। यन्त्र बन चुकने पर नदी के दोनों तटों की मिट्टी लाकर गणेशजी की प्रतिमा बनावे और यन्त्र को मूर्ति के उदर में स्थापित कर दे। इसके पश्चात् मूर्ति के कुछ सूखने तक 'गणेशः प्रियताम' मन्त्र जपता रहे। बाद में उस सयन्त्र



मूर्ति को गोदुग्ध से स्नान कराकर लड्डुओं का प्रसाद चढ़ावे। और गणेश



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.

राजा या राजकर्मचारी यदि अनुकूल रहे तो बड़ा सुख मिलता है। उन्हें अनुकूल बनाने के लिए यह यन्त्र बनाकर इसकी साधना करने से इष्टलाभ प्राप्त हो सकता है।

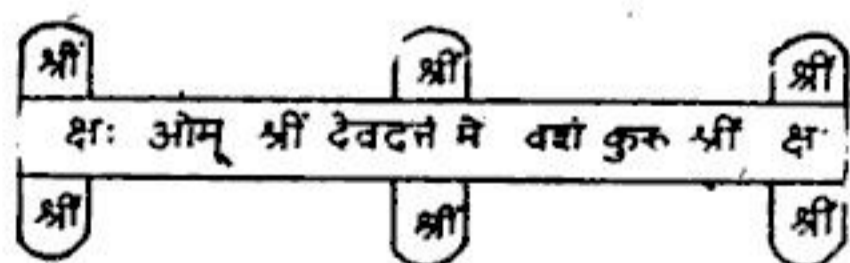
यन्त्र-रचना करते समय 'देवदत्त' के स्थान पर उस व्यक्ति (राजा या राजकर्मचारी) का नाम लिखना चाहिए।

भोजपत्र पर रोचना, कुंकुम तथा श्रीखण्ड की स्याही और अनार की कलम से यह यन्त्र लिखकर विधिवत् पूजन किया जाता है। षोडशोपचार पूजन के बाद कुमारी कन्याओं और ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिए।

स्मरण रहे कि पूजन के समय, यन्त्र के बीच लिखे हुए मन्त्र को १०८ बार (एक माला) जप लेना आवश्यक है। इसके बाद जब कभी आवश्यकता हो, उस अधिकारी के पास जाय। उस समय उपर्युक्त यन्त्र को मुट्ठी में लिये रहना चाहिए किन्तु भोजपत्र कटा-फटा न हो, यन्त्र के सम्बन्ध में मन में कोई दुविधा-भ्रम न हो। कारण कि श्रद्धा और विश्वास तन्त्र-साधना के मुख्य अंग हैं। इनके अभाव में कोई भी आध्यात्मिक साधना सफल नहीं हो सकती।

स्वामी वशीकरण यन्त्र

नौकरीपेशा लोगों को यदि मालिक का स्नेह प्राप्त रहे तो सुविधा रहती है। मालिक के स्थान पर विभागीय अधिकारी का भी वही महत्त्व होता है। ऐसे लोगों (मालिक या उसके प्रतिनिधि) को वशीकरण द्वारा अनुकूल बनाया जा सकता है। नीचे दिया गया यन्त्र ऐसे प्रयोग के लिए श्रेष्ठ माना जाता है।



इस यन्त्र को भोजपत्र पर कुंकुम से लिखकर शराब-सम्पुट करके आग पर रख दे। जल जाने पर उसे खोलकर यन्त्र की राख निकाले और पानी में घोलकर पी जाय। इस क्रिया के फलस्वरूप वह व्यक्ति, जिसका नाम यन्त्र में देवदत्त के स्थान पर लिखा गया था, वशीभूत हो जायगा और तब वह अनुकूल सहायता का साधन भी बन सकता है।



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



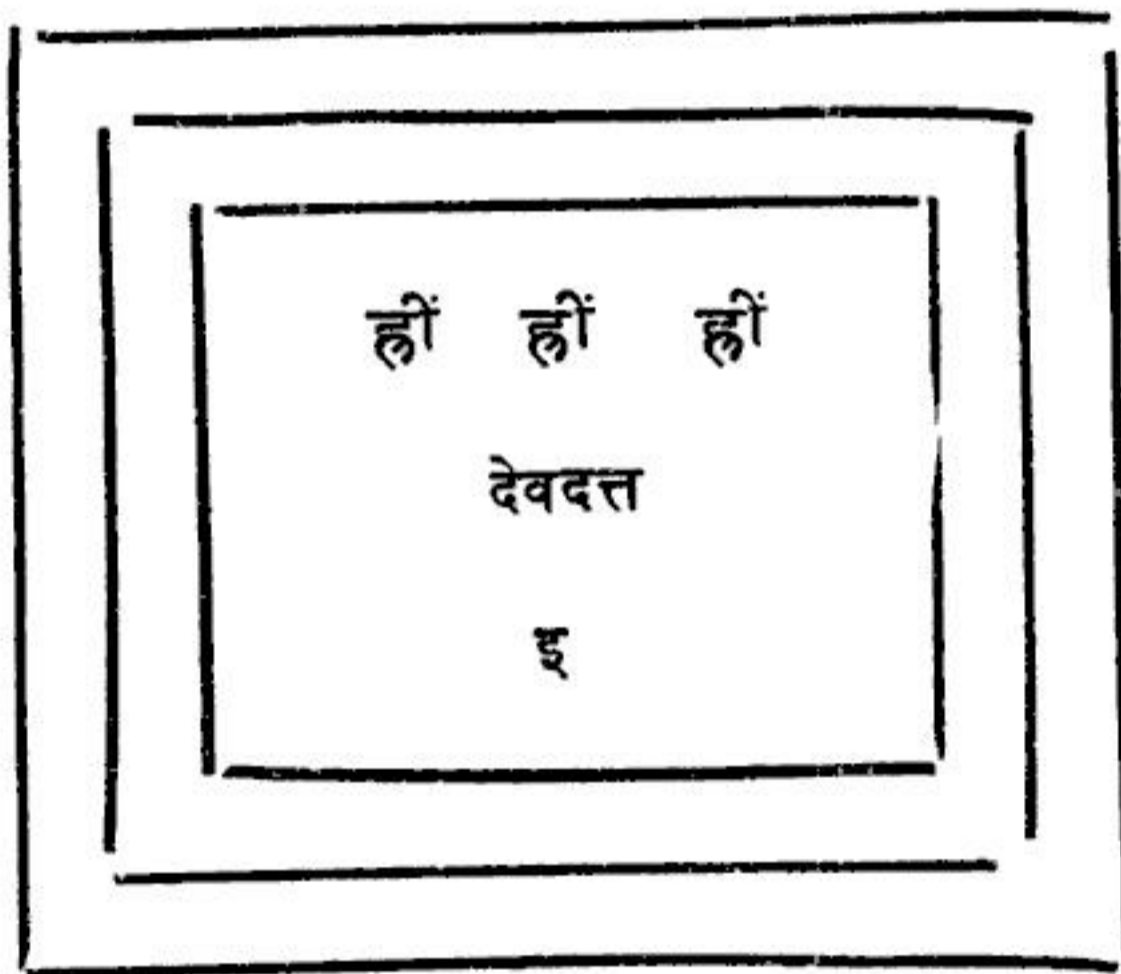
You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.

सर्वप्रथम अमावस की रात में गौरोचन से भोजपत्र पर इस यन्त्र को लिखे फिर घोबिन के पैर तले की मिट्टी लाकर उसकी पुतली बनावे। पुतली के हृदय में यन्त्र रखकर पुतली की पूजा करे, फिर चूल्हे के पास जमीन में गाड़ दे। यन्त्र को गाड़ने के पश्चात अजा-रक्त मिश्रित प्रसाद चढ़ावे, धूप दे और इस यन्त्र (ओम महाकालाय नमः) के साथ हवन करके १०८ बार आहुति दे। आहुति के लिए वही अजा-रक्त का प्रसाद, घी, लाल फूल होना चाहिए। इस यन्त्र के सिद्ध हो जाने पर वह व्यक्ति वशीभूत हो जायेगा और साधक की इच्छानुसार कार्य करेगा।

यन्त्र इस प्रकार बनाना चाहिए—



उच्छिष्ट पिशाच यन्त्र

व्यापार सम्बन्धी कोई समस्या अथवा विरोध उत्पन्न हो जाय, तो उसके समाधान हेतु यह उच्छिष्ट पिशाच यन्त्र लाभदायक होता है। भोजपत्र पर इस यन्त्र की रचना की जाती है। स्याही के रूप में गौरोचन का प्रयोग उपयोगी रहता है।

जिस प्रकार पूर्व में २-३ यन्त्रों की पूजा-लिखी गयी है ठीक वैसी ही इस यन्त्र की भी पूजा की जाती है। पाँच दिन तक लगातार इस यन्त्र की पूजा की जाय, तो यह सिद्ध हो जाता है। यन्त्र की आकृति आगे दी गयी है।



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



A.H.W.
SUPA SERIES

हजारों साल पहले न आज जैसे
माइक्रोस्कोप थे न टेलीस्कोप, न राडार थे
न डाइनामाइट, फिर भी वनवासी भारतीय
ऋषियों ने मंत्र, यंत्र और तंत्र के सहारे
अन्तरिक्ष से पाताल तक, जल, वायु, प्रकाश,
नक्षत्र, पशु-पक्षी और जड़ी-बूटियों के सभी
रहस्यों को जानकर मनुष्यता को अजेय,
अमर और अविनाशी होने का ज्ञान-विज्ञान
प्रदान किया था। आयुर्वेद और विज्ञान
की कसौटी पर खरे उतरे, ये विधि-विधान
आपकी पग-पग पर रक्षा करेंगे।

यन्त्र-शक्ति

जानिये और मनुष्यता को संकटों
से उबारिये।



सुबोध पब्लिकेशन्स